

गरवी गुजरात

PRGI No. GJHIN/26/A1393

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM SURAT, AHMEDABAD, LUCKNOW

वर्ष : 01
अंक : 044
दि. 16.11.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा
SURAT EDITION

तीन हफ्ते में तीसरे चक्रवात का खतरा, 'अकवन' को लेकर ओडिशा में अलर्ट

भुवनेश्वर। बंगाल की खाड़ी में लगातार बन रहे चक्रवाती सिस्टम के बीच पूर्वी तट के राज्यों पर एक बार फिर प्राकृतिक आपदा का खतरा मंडराने लगा है। चक्रवात अर्नब और मुरासु के बाद अब तीन सप्ताह के भीतर तीसरे चक्रवाती तूफान की आशंका ने ओडिशा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल की चिंता बढ़ा दी है। बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में बना निम्न दबाव का क्षेत्र तेजी से संगठित होकर गहरे दबाव में तब्दील हो गया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार, इसके उत्तर-उत्तर-पश्चिम दिशा में आगे बढ़ने और 16 नवंबर तक चक्रवाती तूफान का रूप लेने की संभावना है। मौसम विभाग ने आशंका जताई है कि 17 नवंबर तक यह सिस्टम और अधिक शक्तिशाली होकर गंभीर चक्रवाती तूफान में बदल सकता है। संभावित तूफान को लेकर ओडिशा सरकार ने सभी जिलों, विशेषकर दक्षिणी और तटीय क्षेत्रों के प्रशासन को सतर्क कर दिया है।

मौसम विभाग के अनुसार, बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्व में विकसित हुआ मौसमी सिस्टम तीन घंटे के दौरान करीब 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर की ओर बढ़ा। सुबह 8:30 बजे तक यह ओडिशा के गोपालपुर से लगभग 1,130 किलोमीटर दक्षिण-दक्षिण-पूर्व में केंद्रित था। विभाग ने बताया कि इसके लगातार उत्तर-उत्तर-पश्चिम दिशा में बढ़ने की संभावना है। अनुकूल मौसमी परिस्थितियां मिलने पर यह 16 नवंबर को दक्षिण-मध्य बंगाल की खाड़ी और उससे सटे पश्चिम-मध्य हिस्से में चक्रवाती तूफान का रूप ले सकता है। इसके बाद 17 नवंबर को पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी के ऊपर इसके गंभीर चक्रवाती तूफान में बदलने की आशंका जताई गई है। इस संभावित चक्रवात को 'अकवन' नाम दिया गया है, जो ईरान की ओर से प्रस्तावित नाम है।

इस मौसमी गतिविधि के कारण बंगाल की खाड़ी, अंडमान सागर और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के आसपास के क्षेत्रों में मौसम बिगड़ने की आशंका है। समुद्र में तेज हवाएं चल सकती हैं और लहरें ऊंची उठने के साथ समुद्री परिस्थितियां प्रतिकूल हो सकती हैं। मौसम विभाग के अनुमान के मुताबिक, अगले दो दिनों में यह सिस्टम और मजबूत होकर उत्तर-पश्चिम दिशा में



आंध्र प्रदेश के तट की ओर बढ़ सकता है। हालांकि, फिलहाल इसके संभावित लैंडफॉल यानी तट से टकराने के स्थान और समय को लेकर कोई अंतिम अनुमान जारी नहीं किया गया है। इसी अनिश्चितता को देखते हुए तटीय राज्यों के प्रशासन को पहले से तैयारी रखने की सलाह दी गई है। ओडिशा सरकार ने संभावित खतरे को गंभीरता से लेते हुए सभी जिलों को सतर्क रहने के निर्देश दिए हैं। खासतौर पर दक्षिणी ओडिशा और समुद्र तट से लगे जिलों में प्रशासनिक तैयारियां तेज करने को कहा गया है। राज्य सरकार का मानना है कि चक्रवात की दिशा और तीव्रता में बदलाव की संभावना को देखते हुए किसी भी तरह की लापरवाही भारी पड़ सकती है। अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे मौसम विभाग के प्रत्येक अपडेट पर नजर रखें और जरूरत पड़ने पर तत्काल राहत एवं बचाव कार्य शुरू करने के लिए तैयार रहें।

राज्य के आपदा प्रबंधन मामलों के मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा कि सरकार एहतियात के तौर पर सभी जरूरी कदम उठा रही है। उन्होंने बताया कि अक्टूबर में आए चक्रवात अर्नब ने दक्षिणी जिलों में भारी तबाही मचाई थी, जबकि नवंबर की शुरुआत में चक्रवात मुरासु के प्रभाव से इस क्षेत्र में बारिश शुरू हुई थी। लगातार दो मौसमी घटनाओं के बाद अब तीसरे संभावित चक्रवात की आशंका ने प्रशासन की जिम्मेदारी और बढ़ा दी है। पुजारी के अनुसार, भले ही मौसम विभाग ने अभी तक संभावित तूफान के लैंडफॉल को लेकर कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी है, लेकिन पिछले अनुभवों को देखते हुए जिलों को पहले ही अलर्ट पर रखा गया है। सरकार का उद्देश्य है कि तूफान की दिशा और प्रभाव स्पष्ट होने से पहले ही आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली जाएं, ताकि किसी भी आपात स्थिति में जान-माल के नुकसान को कम किया जा सके।

प्रशासन ने सभी जिलों में चौबीसों घंटे संचालित होने वाले नियंत्रण कक्ष स्थापित करने के निर्देश दिए हैं। इन कंट्रोल रूम के माध्यम से मौसम संबंधी सूचनाओं, संभावित जलभराव, बिजली और सड़क व्यवस्था तथा राहत एवं बचाव कार्यों की निगरानी की जाएगी। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ), ओडिशा आपदा त्वरित कार्रवाई बल (ओडीआरएएफ), अग्निशमन विभाग और आपातकालीन सेवाओं से जुड़े कर्मचारियों को तैयार रहने को कहा गया है। जरूरत पड़ने पर प्रभावित इलाकों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने और राहत सामग्री उपलब्ध कराने के लिए भी व्यवस्था की जा रही है। प्रशासन को संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करने और वहां रहने वाले लोगों तक समय रहते चेतावनी पहुंचाने पर विशेष ध्यान देने को कहा गया है।

दक्षिणी ओडिशा के जिलों में संभावित चक्रवात को लेकर जागरूकता अभियान भी शुरू कर दिया गया है। स्थानीय प्रशासन लोगों को खराब मौसम, तेज हवाओं और समुद्र में उठने वाली ऊंची लहरों से जुड़े खतरों के प्रति सचेत कर रहा है। जिन इलाकों में पहले भी बाढ़ और जलभराव की स्थिति बनी है, वहां विशेष निगरानी रखने की तैयारी है। चक्रवात अर्नब के दौरान दक्षिणी ओडिशा का बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ था। 28 अक्टूबर को पड़ोसी आंध्र प्रदेश में आए इस तूफान के प्रभाव से क्षेत्र में भीषण बारिश और बाढ़ की स्थिति बनी थी। कई इलाकों में जनजीवन प्रभावित हुआ था। ऐसे में प्रशासन इस बार पहले से सतर्क रहकर नुकसान की आशंका कम करना चाहता है।

समुद्र में मछली पकड़ने जाने वाले मछुआरों की सुरक्षा को लेकर भी विशेष निर्देश जारी किए गए हैं। प्रशासन ने मछुआरों को 16 नवंबर तक समुद्र से लौटकर तट पर पहुंचने की सलाह दी है। मत्स्य विभाग को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि निर्धारित समय के बाद कोई भी मछुआरा समुद्र में न जाए। समुद्र में पहले से मौजूद नौकाओं को सुरक्षित वापस लाने और तटीय क्षेत्रों में चेतावनी पहुंचाने पर जोर दिया जा रहा है। समुद्र में मौसम बिगड़ने की स्थिति में मछुआरों के लिए तेज हवाएं और ऊंची लहरें जानलेवा साबित हो सकती हैं, इसलिए इस निर्देश को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

मौसम विभाग की चेतावनी के बाद ओडिशा के साथ आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। हालांकि चक्रवात की अंतिम दिशा, उसकी तीव्रता और तट पर संभावित प्रभाव को लेकर आगे के मौसम बुलेटिन का इंतजार किया जा रहा है। फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती यह है कि पिछले कुछ सप्ताह में लगातार सक्रिय हुए मौसमी सिस्टम के कारण तटीय इलाकों में लोगों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। प्रशासन के सामने राहत एवं बचाव व्यवस्था को मजबूत रखने के साथ-साथ आम लोगों को समय पर सही जानकारी पहुंचाने की जिम्मेदारी है। मौसम विभाग के अगले पूर्वानुमानों के आधार पर राज्यों को अपनी तैयारियों में बदलाव करना पड़ सकता है।

यमुना घाट पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिया संध्या अर्घ्य, दिल्ली की खुशहाली की कामना

नई दिल्ली। लोक आस्था, सूर्य उपासना और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महापर्व छठ रविवार को राजधानी दिल्ली में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। यमुना तट से लेकर शहर के विभिन्न छठ घाटों तक भक्तिमय माहौल देखने को मिला। हजारों श्रद्धालुओं ने अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर छठी मैया की पूजा-अर्चना की और परिवार की सुख-समृद्धि तथा खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सोनिया विहार स्थित यमुना नदी के घाट पर पहुंचीं। उन्होंने विधि-विधान से सूर्यदेव को संध्या अर्घ्य अर्पित किया और छठी मैया से समस्त दिल्लीवासियों के सुख, समृद्धि एवं उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री की मौजूदगी में यमुना तट पर आयोजित पूजा में बड़ी संख्या में व्रती और श्रद्धालु शामिल हुए। घाटों पर छठ गीतों की गूंज, पारंपरिक वेशभूषा, पूजा के सूप, दीपों और प्रसाद से सजा वातावरण पूरी तरह भक्तिमय नजर आया।

संध्या अर्घ्य के अवसर पर मुख्यमंत्री ने यमुना तट पर बनाए गए छठ घाटों का निरीक्षण भी किया। वह बोट पर सवार होकर विभिन्न घाटों तक पहुंचीं और वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने घाटों पर मौजूद छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं का अभिवादन किया तथा सभी को महापर्व की शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने पूजा में शामिल होकर छठी मैया और भगवान भास्कर से प्रार्थना की कि सभी व्रतियों की साधना सफल हो और प्रत्येक परिवार में सुख, शांति,



समृद्धि तथा आरोग्य का वास हो।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि छठ महापर्व लोक आस्था का ऐसा पर्व है, जिसमें अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सनातन संस्कृति के महान संस्कारों को दर्शाती है। सूर्य जीवन, ऊर्जा और प्रकृति के संतुलन का आधार हैं। छठ पूजा के माध्यम से लोग प्रकृति के प्रति सम्मान और जीवन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। उन्होंने कामना की कि छठी मैया और भगवान सूर्यदेव का आशीर्वाद सभी परिवारों पर बना रहे तथा हर घर में सुख-समृद्धि और खुशहाली आए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छठ महापर्व केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आस्था, अनुशासन, स्वच्छता, समर्पण और सामाजिक समरसता का अनुपम उत्सव है। यह पर्व लोगों को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति सम्मान का भाव सिखाता है। छठ में डूबते और उगते सूर्य, दोनों की उपासना की जाती है। यह परंपरा जीवन के हर चरण के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का संदेश देती है। पर्व के दौरान परिवार के सदस्य ही नहीं, बल्कि पूरा समाज एक साथ पूजा-अर्चना में सहभागी बनता है। यही सामूहिकता, सहयोग और लोक संस्कृति छठ को अन्य पर्वों से विशिष्ट बनाती है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली देश के हर हिस्से से आए लोगों का अपना घर है। राजधानी के विकास और निर्माण में पूर्वांचल समाज के लोगों ने मेहनत, परिश्रम और समर्पण से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छठ महापर्व पूर्वांचल के लोगों की आस्था और सांस्कृतिक पहचान से गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐसे में दिल्ली सरकार का संकल्प है कि राजधानी में रहने वाले पूर्वांचल के भाई-बहनों को अपने पर्व और त्योहार मनाने के लिए घर जैसा अपनापन और जरूरी सुविधाएं मिलें। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार श्रद्धालुओं को बेहतर छठ घाट, स्वच्छ वातावरण और पूजा-अर्चना के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी कहा कि सभी समुदायों और क्षेत्रों के लोग दिल्ली को अपना घर मानते हैं और उनके सांस्कृतिक आयोजनों को सम्मान तथा सुविधा मिलना जरूरी है। राजधानी के विभिन्न घाटों पर छठ पूजा के आयोजन के बीच दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने भी रविवार को अपने निवास स्थान पर छठ महापर्व श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया।

छठी मइया की भक्ति में देश, मोदी से राहुल तक नेताओं ने दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली। लोक आस्था और सूर्य उपासना के महापर्व छठ पर रविवार को देशभर में श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। चार दिवसीय पर्व के महत्वपूर्ण पड़ाव संध्या अर्घ्य के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने छठी मइया और सूर्यदेव की कृपा से सभी के जीवन में सुख, शांति और नई ऊर्जा आने की कामना की। उन्होंने कहा कि प्रकृति की पूजा को समर्पित यह पावन पर्व समाज में सद्भाव और समरसता को और मजबूत करे। वहीं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी छठ पर्व की शुभकामनाएं देते हुए लोगों के सुख-समृद्धि और आरोग्य की कामना की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने संदेश में लिखा कि सभी देशवासियों को महापर्व छठ के संध्या अर्घ्य की अनेकानेक शुभकामनाएं। उन्होंने कहा कि प्रकृति-पूजन को समर्पित यह पावन अवसर हर किसी के जीवन में नई चेतना और स्फूर्ति लेकर आए। साथ ही समाज में सद्भाव एवं समरसता का भाव और अधिक प्रगाढ़ हो। प्रधानमंत्री ने सूर्यदेव की कृपा से सभी के जीवन को आलोकित होने की कामना करते हुए अपने संदेश का समापन 'जय छठी मइया' के उद्घोष के साथ किया।

छठ महापर्व के अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने भी व्रतियों और श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने एक्स पर अपने संदेश में कहा कि संध्या



अर्घ्य के पावन अवसर पर सभी व्रतियों एवं श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएं। उन्होंने छठ को भारतीय संस्कृति की अनूठी परंपरा बताते हुए कहा कि इस पर्व में उगते सूर्य के साथ-साथ अस्ताचलगामी सूर्य को भी अर्घ्य देकर सम्मान दिया जाता है। भगवान भास्कर और छठी मइया सभी के जीवन में सुख, शांति और आरोग्य बनाए रखें। उन्होंने जय छठी मइया और जय सूर्यदेव के उद्घोष के साथ अपनी शुभकामनाएं दीं।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी छठ महापर्व को लेकर विशेष उत्साह दिखाई दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मां गोमती के तट पर आयोजित संध्या अर्घ्य कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने छठी मइया की आराधना और सूर्य उपासना के इस पर्व पर श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं। गोमती तट पर बड़ी संख्या में व्रती महिलाएं और श्रद्धालु अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के लिए पहुंचे। घाटों पर छठ गीतों और धार्मिक जयकारों के बीच श्रद्धालुओं ने परिवार की सुख-समृद्धि और सभी के कल्याण की कामना की।

कांग्रेस के सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भी छठ पर्व पर देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि सभी को छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं। सूर्य उपासना का यह महापर्व सभी के जीवन को आलोकित करे और नई ऊर्जा लेकर आए। उनके संदेश में भी इस पर्व की सकारात्मकता, आस्था और मंगलकामना का भाव दिखाई दिया।

छठ महापर्व भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और अनुशासन का प्रतीक माना जाता है। इस पर्व में सूर्यदेव को जीवन, ऊर्जा और आरोग्य का आधार मानकर उनकी उपासना की जाती है। विशेष बात यह है कि छठ में अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद अगले दिन उगते सूर्य की पूजा की जाती है। यह परंपरा जीवन के हर पड़ाव के प्रति सम्मान और प्रकृति के प्रति आभार का संदेश देती है। व्रती कठिन नियमों का पालन करते हुए उपवास रखते हैं और जलाशयों, नदियों तथा तालाबों के किनारे पहुंचकर पूरी श्रद्धा के साथ अर्घ्य अर्पित करते हैं। संध्या अर्घ्य के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों में घाटों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। खासकर बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में छठ की विशेष रौनक रही। हालांकि अब यह पर्व देश के दूसरे राज्यों और विदेशों में भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। छठ के गीत, पारंपरिक प्रसाद, सूप और दउरा में सजाए गए फल तथा दीपों से सजे घाट इस महापर्व की विशिष्ट पहचान हैं। राजनीतिक दलों के नेताओं की ओर से दी गई शुभकामनाओं के बीच पर्व ने एक बार फिर सामाजिक एकता, लोकपरंपरा और प्रकृति के सम्मान का संदेश दिया।

ASEAN से रिश्तों की नई पाठशाला बनेगी नालंदा यूनिवर्सिटी

नई दिल्ली। भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच संबंधों को नई दिशा देने की कोशिश अब शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक साझेदारी के क्षेत्र में भी दिखाई देने लगी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फिलीपींस यात्रा और ASEAN-India Summit में भागीदारी के बीच बिहार के राजगीर स्थित नालंदा यूनिवर्सिटी को भारत की कूटनीतिक पहल के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। भारत प्राचीन नालंदा की ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा और तकनीकी शोध से जोड़कर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ अपने ऐतिहासिक संबंधों को नई मजबूती देना चाहता है। इस पहल के माध्यम से नालंदा केवल एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि भारत और ASEAN देशों के बीच शिक्षा, संस्कृति, अनुसंधान और विचारों के आदान-प्रदान का साझा मंच बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यहां बौद्ध अध्ययन और प्राचीन सभ्यताओं से जुड़े विषयों के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, गणित और अन्य आधुनिक विषयों की पढ़ाई भी हो रही है। भारत की यह पहल अपनी सांस्कृतिक विरासत को भविष्य की जरूरतों के साथ जोड़ने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

प्रधानमंत्री मोदी की फिलीपींस यात्रा के दौरान भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच रणनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहयोग को आगे बढ़ाने पर विशेष जोर रहने की उम्मीद है। इसी संदर्भ में विदेश मंत्रालय ने प्रधानमंत्री की यात्रा से पहले आयोजित विशेष ब्रीफिंग में नालंदा यूनिवर्सिटी की भूमिका को रेखांकित किया। विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) ने बताया कि नालंदा की मूल परिकल्पना प्राचीन काल में भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच मौजूद शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को फिर से जीवंत करना है। इस विश्वविद्यालय के माध्यम से भारत उन ऐतिहासिक संपर्कों को आधुनिक समय की जरूरतों के अनुरूप आगे बढ़ाना चाहता है, जिनका आधार सदियों से ज्ञान, दर्शन, धर्म और सांस्कृतिक आदान-प्रदान रहा है। नालंदा की पहचान प्राचीन काल से ही एक ऐसे शिक्षा केंद्र के रूप में रही है, जहां विभिन्न क्षेत्रों से विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने आते थे। बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, भाषा और अन्य विषयों के अध्ययन के लिए इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। एशिया के अनेक हिस्सों से विद्वानों और विद्यार्थियों का यहां आना-जाना रहा। इसी ऐतिहासिक विरासत ने भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक संबंधों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भारत इसी विरासत को आधुनिक शैक्षणिक सहयोग का आधार बना रहा है। उद्देश्य यह है कि नालंदा की पहचान केवल अतीत की गौरवगाथा तक सीमित न रहे, बल्कि वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर शोध करने वाले अंतरराष्ट्रीय संस्थान के रूप में भी स्थापित हो। इस दिशा में नालंदा यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर साउथईस्ट एशियन स्टडीज की स्थापना महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। यह केंद्र भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच शैक्षणिक, सांस्कृतिक और नीतिगत सहयोग को बढ़ावा देने का काम करेगा।

किश्तवाड़ के दुर्गम जंगलों में आतंकियों की घेराबंदी, हेलीकॉप्टर और ड्रोन से तलाश तेज

किश्तवाड़। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में आतंकियों के खिलाफ सुरक्षा बलों ने अभियान तेज कर दिया है। दच्छन और मड़वा के दुर्गम जंगलों तथा ऊंची पहाड़ियों में छिपे आतंकियों की तलाश के लिए जमीन से लेकर आसमान तक निगरानी का व्यापक इंतजाम किया गया है। घने जंगलों और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण तलाशी अभियान चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। ऐसे में सुरक्षा बल हेलीकॉप्टर और ड्रोन की मदद से पूरे इलाके पर नजर रख रहे हैं, जबकि जमीन पर संयुक्त टीमें खोजी कुत्तों के साथ जंगलों और संदिग्ध ठिकानों की बारीकी से तलाशी ले रही हैं। दो विशेष पुलिस अधिकारियों (एसपीओ) की हत्या के बाद शुरू किया गया यह अभियान लगातार जारी है। सुरक्षा एजेंसियों का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में सक्रिय आतंकियों का पता लगाना, उनके छिपने के ठिकानों तक पहुंचना और उनके नेटवर्क को समाप्त करना है।

अभियान में जम्मू-कश्मीर पुलिस का स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी), भारतीय सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और ग्राम रक्षा गार्ड (वीडीजी) की संयुक्त टीमें शामिल हैं। अलग-अलग सुरक्षा एजेंसियों के जवान आपसी समन्वय के साथ जंगलों, पहाड़ी रास्तों और संभावित ठिकानों की तलाशी ले रहे हैं। इलाके की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए अभियान में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। घने पेड़ों, दुर्गम पहाड़ियों और सीमित पहुंच वाले रास्तों के कारण आतंकियों की तलाश में समय और अतिरिक्त संसाधनों की जरूरत पड़ रही है। इसी वजह से हवाई निगरानी के साथ



जमीनी तलाशी को भी लगातार मजबूत किया जा रहा है।

ऑपरेशन की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वरिष्ठ पुलिस और सुरक्षा अधिकारी स्वयं अभियान की निगरानी कर रहे हैं। जम्मू के पुलिस महानिरीक्षक (आईजीपी) किश्तवाड़ में मौजूद रहकर पूरे अभियान की समीक्षा कर रहे हैं। वहीं डीआईजी डीकेआर और किश्तवाड़ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) अन्य पुलिस एवं सैन्य अधिकारियों के साथ जमीनी स्तर पर ऑपरेशन का नेतृत्व कर रहे हैं। अधिकारियों की मौजूदगी में अलग-अलग सुरक्षा टीमों के बीच तालमेल बनाए रखने और तलाशी अभियान को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। संदिग्ध गतिविधियों और आतंकियों के संभावित ठिकानों से जुड़ी सूचनाओं का भी आकलन किया जा रहा है।

दरअसल, किश्तवाड़ के दच्छन इलाके में 11 नवंबर को आतंकियों ने दो विशेष पुलिस अधिकारियों की हत्या कर दी थी। इस वारदात ने पूरे क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी। घटना के बाद से ही सुरक्षा बलों ने आसपास के जंगलों और पहाड़ी इलाकों में तलाशी अभियान शुरू कर दिया था। दोनों एसपीओ के लापता होने के बाद उनकी तलाश की जा रही थी। गुरुवार को सुरक्षा बलों ने उनके गोलियों से छलनी शव बरामद किए। घटना की गंभीरता इसलिए भी बढ़ गई क्योंकि दोनों अधिकारियों के सर्विस हथियार भी मौके से गायब मिले। इससे सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ गई है और आतंकियों की तलाश के साथ-साथ गायब हथियारों का पता लगाने पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

सुरक्षा एजेंसियां इस वारदात को केवल दो पुलिसकर्मियों की हत्या तक सीमित मानकर नहीं देख रही हैं, बल्कि क्षेत्र में सक्रिय आतंकी नेटवर्क की गतिविधियों को भी जांच के दायरे में रख रही हैं। एजेंसियों का प्रयास है कि दच्छन और मड़वा के जंगलों में सक्रिय आतंकियों की पहचान कर उनके संपर्कों, मददगारों और संभावित ठिकानों का पता लगाया जाए। पहाड़ी क्षेत्रों में आतंकियों की आवाजाही और उनके छिपने की संभावनाओं को देखते हुए आसपास के इलाकों में भी सतर्कता बढ़ाई गई है। सुरक्षा बल स्थानीय स्तर पर मिलने वाली सूचनाओं को गंभीरता से लेते हुए तलाशी अभियान आगे बढ़ा रहे हैं।

इस बीच सुरक्षा एजेंसियों ने तीन वांछित आतंकियों के पोस्टर भी जारी किए हैं। इनकी गिरफ्तारी या इनके बारे में पुख्ता जानकारी देने वाले व्यक्ति के लिए कुल 30 लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया है। पोस्टरों के माध्यम से आम लोगों से अपील की गई है कि यदि उन्हें इन आतंकियों के बारे में कोई विश्वसनीय जानकारी मिलती है तो वे सुरक्षा एजेंसियों को सूचित करें। इनाम की घोषणा को आतंकियों तक पहुंचने और उनके नेटवर्क के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि, सुरक्षा एजेंसियों की प्राथमिकता अभियान के दौरान आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और आतंकियों की गतिविधियों पर प्रभावी रोक लगाने की है।

किश्तवाड़ का दच्छन-मड़वा क्षेत्र अपनी दुर्गम पहाड़ी बनावट और घने जंगलों के कारण सुरक्षा बलों के लिए चुनौतीपूर्ण माना जाता है। ऐसे इलाकों में तलाशी अभियान के दौरान हर रास्ते, जंगल के हिस्से और संभावित ठिकाने की जांच जरूरी होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा बलों ने हवाई निगरानी, खोजी कुत्तों और जमीनी दस्तों को अभियान में शामिल किया है। फिलहाल संयुक्त सुरक्षा बलों की टीमें पूरे क्षेत्र में सक्रिय हैं और आतंकियों की तलाश जारी है। दो एसपीओ की हत्या के बाद सुरक्षा एजेंसियां किसी भी संभावित खतरे को लेकर अतिरिक्त सतर्कता बरत रही हैं। आने वाले समय में जांच और तलाशी के दौरान मिलने वाली सूचनाओं के आधार पर अभियान का दायरा और बढ़ाया जा सकता है।

मनीला में क्वाड समिट के संकेत, भारत की चुप्पी से बढ़ी कूटनीतिक हलचल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी फिलीपींस यात्रा के दौरान मनीला में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष नेताओं की संभावित बैठक को लेकर अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में हलचल तेज हो गई है। चारों देशों के रणनीतिक समूह क्वाड (क्वाड्रिलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग) की बैठक को लेकर अमेरिका और जापान की ओर से स्पष्ट संकेत दिए जा चुके हैं, लेकिन भारत ने अब तक इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। एक तरफ अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो बैठक को लेकर चारों देशों के बीच सहमति बनने की बात कह चुके हैं, वहीं जापान ने 17 नवंबर को मनीला में शिखर बैठक आयोजित करने की तैयारियों का संकेत दिया है। इसके उलट भारत के विदेश मंत्रालय का कहना है कि फिलहाल उसके पास प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में ऐसी किसी बैठक की पुष्टि से जुड़ी जानकारी नहीं है। इस अंतर ने कई कूटनीतिक सवाल खड़े कर दिए हैं कि क्या चारों देशों के नेताओं की मुलाकात को लेकर अंतिम स्तर पर बातचीत जारी है या फिर कार्यक्रम और भागीदारी से जुड़ी औपचारिकताएं अभी पूरी नहीं हुई हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिलीपींस में आयोजित आसियान शिखर सम्मेलन और ईस्ट एशिया समिट में हिस्सा लेने जा रहे हैं। इस यात्रा को भारत की हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती कूटनीतिक सक्रियता के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसी दौरान क्वाड नेताओं की संभावित बैठक की खबरों ने यात्रा का रणनीतिक महत्व और बढ़ा दिया है। क्वाड में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। चारों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्र, खुले और नियम आधारित व्यवस्था, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग तथा उभरती तकनीकों के क्षेत्र में साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में काम करते रहे हैं। ऐसे में मनीला में नेताओं की संभावित मुलाकात को केवल औपचारिक बैठक के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक रणनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में भी देखा जा रहा है।

बैठक की संभावना को लेकर सबसे पहले



अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो का बयान चर्चा में आया था। उन्होंने अक्टूबर में एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि चारों क्वाड देशों के बीच फिलीपींस में होने वाले आसियान सम्मेलन के दौरान नेताओं की बैठक आयोजित करने पर सहमति बन गई है। रुबियो ने संकेत दिया था कि यह बैठक वर्ष के अंत से पहले मनीला में होगी। उनके बयान से यह भी संकेत मिला था कि प्रस्तावित बैठक में केवल आपसी विचार-विमर्श तक सीमित रहने के बजाय कुछ ठोस पहलों और फैसलों की घोषणा हो सकती है। हालांकि, उस समय उन्होंने बैठक की निश्चित तारीख और विस्तृत कार्यक्रम का खुलासा नहीं किया था।

इसके बाद जापान की ओर से भी इस संभावित शिखर बैठक को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई। जापान के उप मुख्य कैबिनेट सचिव मासानाओ ओजाकी ने 13 नवंबर को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि जापान, अमेरिका, भारत और ऑस्ट्रेलिया के नेता मनीला में मंगलवार, 17 नवंबर को क्वाड शिखर बैठक आयोजित करने की तैयारी कर रहे हैं। जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सहित चारों देशों के शीर्ष नेताओं की संभावित भागीदारी को लेकर भी संकेत दिए गए। ओजाकी के मुताबिक, बैठक में आर्थिक सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सहयोग को दोहराए जाने की उम्मीद है। इससे साफ है कि जापान इस बैठक को लेकर गंभीर तैयारी के संकेत दे रहा है। हालांकि, भारत की ओर से अब तक सामने आया आधिकारिक बयान इन दावों से अलग है। प्रधानमंत्री की फिलीपींस यात्रा से पहले 12 नवंबर को विदेश मंत्रालय की विशेष ब्रीफिंग आयोजित की गई थी। इस दौरान सचिव (पूर्व) रुद्रेंद्र टंडन से जब मनीला में क्व

चाय पर चर्चा

अपनी जड़ों को पहचानना सिखाती है छठ

कुछ पर्व कैलेंडर पर दर्ज होते हैं, कुछ स्मृतियों में और कुछ मनुष्य की सामूहिक चेतना में। छठ ऐसा ही पर्व है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, आत्मानुशासन, सामाजिक समानता और अपनी जड़ों से जुड़े रहने की अद्भुत भारतीय परंपरा है। बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों से निकलकर आज छठ देश-दुनिया के अनेक हिस्सों तक पहुंच चुकी है। इसकी भौगोलिक यात्रा चाहे जितनी लंबी हुई हो, इसका मूल तत्व अब भी उसी मिट्टी, नदी, पोखर और परिवार से जुड़ी है, जहां से इस लोक-परंपरा ने आकार लिया। छठ मूलत: सूर्योपासना का पर्व है। सूर्य हमारे लिए केवल आकाश में चमकता हुआ खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि जीवन और ऊर्जा का प्रत्यक्ष स्रोत है। प्रकाश, ऊष्मा और कृषि-चक्र से लेकर पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता तक, हमारी सभ्यता का अस्तित्व सूर्य से गहराई से जुड़ा है। इसलिए छठ में सूर्य को अर्घ्य देना उस प्रकृति के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना है, जिस पर हमारा जीवन निर्भर है। छठ की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है-कृतज्ञता। आधुनिक जीवन ने हमें अधिकारों की भाषा तो खूब सिखाई है, पर कर्तव्यों और कृतज्ञता की भाषा पीछे छूटती जा रही है। छठ हमें याद दिलाती है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, उसका हिस्सा है। जिस सूर्य से ऊर्जा मिलती है, जिस जल से जीवन चलता है, जिस मिट्टी से अन्न, फल- सब्जियां पैदा होती हैं और जिन किसानों की मेहनत से वह हमारे तक पहुंचती हैं, उन सबके प्रति आभार व्यक्त करना भी सभ्यता का हिस्सा है। शायद इसी कारण छठ की पूजा में प्रकृति स्वयं पूजा की सामग्री बन जाती है। सूप और दउरा बनाने वाले कारीगर, फल पैदा करने वाले किसान और छोटे विक्रेता-सभी इस पर्व की सामाजिक संरचना के अभिन्न अंग बन जाते हैं। प्रसाद में स्थानीय और मौसमी फलों का महत्व उपभोक्तावादी प्रदर्शन से बिल्कुल अलग संदेश देता है। छठ हमें सिखाती है कि पूजा की पवित्रता भावना, श्रम और शुचिता में है। इस पर्व का दूसरा अद्भुत पक्ष है-समानता। छठ के घाट पर कोई वीआइपी नहीं होता। हर व्यक्ति सूर्य के सामने समान है। स्त्री हो या पुरुष, संपन्न हो या साधारण, शहरी हो या ग्रामीण-सबकी पहचान केवल एक व्रती और श्रद्धालु की होती है। छठ का एक और संदेश है-डूबते सूर्य को अर्घ्य देना। हमारी सामाजिक मानसिकता प्राय: केवल सफलता, शक्ति और उपलब्धि का अभिनंदन करती है। इसके विपरीत छठ हमें अस्त होते सूर्य के प्रति भी उतनी ही श्रद्धा रखना सिखाती है, जितनी उगते सूर्य के प्रति। यह जीवन के उतार-चढ़ाव को स्वीकार करने का दर्शन है। सफलता में विनम्र रहना और अवसान में भी सम्मान बनाए रखना-आज के प्रतिस्पर्धी समाज के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है। छठ आत्मानुशासन की भी अनुपम मिसाल है। लगभग 36 घंटे का निर्जला व्रत, स्वच्छता, सात्विकता और संयम इसे केवल पूजा तक सीमित नहीं रहने देते, बल्कि शरीर और मन को अनुशासन में रखने की साधना बन जाते हैं। छठ की शक्ति केवल घाट तक सीमित नहीं है। यह परिवार को, पड़ोस को जोड़ती है और सबसे बढ़कर उस व्यक्ति को उसकी जड़ों से, जो रोजी-रोटी की तलाश में हजारों किलोमीटर दूर चला गया है। दिल्ली, मुंबई, सूरत, बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद या विदेश में रहने वाले लाखों लोगों के लिए छठ घर लौटने का भावनात्मक निमंत्रण है। किसी के लिए यह मां के हाथ का प्रसाद पाने की इच्छा है, किसी के लिए बचपन के घाट पर लौटने की लालसा और किसी के लिए महीनों बाद अपने बच्चों को देखने की उम्मीद, लेकिन आधुनिक समय में छठ हमारे सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी रखती है-क्या हम जिस नदी- पोखर और प्रकृति की पूजा करते हैं, उसकी रक्षा भी उसी श्रद्धा से कर रहे हैं? यदि हम गंगा किनारे खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दें और उसी जल में प्लास्टिक, पालीथिन अथवा पूजा सामग्री फेंक दें तो हमारी आस्था अधूरी है। छठ का मूल दर्शन ही स्वच्छता और प्रकृति सम्मान का है। इसलिए आज आवश्यकता है कि छठ को ग्रीन और जीरो-वेस्ट महापर्व बनाने की दिशा में सामूहिक प्रयास हो। आज जब मनुष्य तकनीक और उपभोग की तेज दौड़ में प्रकृति से दूर होता जा रहा है, तब छठ हमें फिर से नदी या किसी अन्य जलस्रोत किनारे खड़ा करती है। वहां न कोई भव्य मंच है, न दिखावे की आवश्यकता। हाथ में सूप है, उसमें कुछ फल हैं, सामने जल है और क्षितिज पर सूर्य है। उस क्षण मनुष्य अपने अस्तित्व के मूल स्रोतों के सामने खड़ा होता है और कहता है-धन्यवाद। शायद छठ की सबसे बड़ी शक्ति यही है। यह हमें केवल पूजा करना नहीं सिखाती, कृतज्ञ होना भी सिखाती है। यह केवल घर लौटना नहीं सिखाती, अपनी जड़ों को जानना-पहचानना भी सिखाती है। यह केवल सूर्य को अर्घ्य देना नहीं सिखाती, उस प्रकृति की रक्षा करने का दायित्व भी याद दिलाती है, जिसके बिना हमारा अस्तित्व संभव नहीं। छठ को क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक पहचान कह देना उसके विराट अर्थ को सीमित कर देना होगा। यह भारतीय जीवन-दर्शन का वह लोकपर्व है, जिसमें आस्था, विज्ञान, परंपरा, आधुनिकता, व्यक्ति, समाज और प्रकृति-सभी एक ही घाट पर आकर खड़े हो जाते हैं।

महिलाओं से किया वादा अब कानून में बदलने का समय

सरकार के लिए यह जरूरी है कि वह महिला आरक्षण और परिसीमन से जुड़े विधेयकों पर विपक्षी दलों के साथ खुला संवाद करे। विपक्ष को भी इस विषय को केवल सत्ता पक्ष की राजनीतिक पहल के रूप में देखने के बजाय उसके संवैधानिक और सामाजिक महत्व पर विचार करना चाहिए।



महिला आरक्षण को लेकर संसद के विशेष सत्र की संभावित तैयारी ने एक बार फिर देश की राजनीति में बहस तेज कर दी है। चर्चा है कि सरकार महिला आरक्षण कानून में संशोधन और परिसीमन से जुड़े विधेयकों को एक साथ संसद में लाकर पारित कराने का प्रयास कर सकती है। ऐसा हुआ तो लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की दिशा में आगे बढ़ने का रास्ता खुल सकता है। हालांकि इस पहल के साथ कई संवैधानिक, राजनीतिक और प्रतिनिधित्व से जुड़े प्रश्न भी जुड़े हैं, जिन पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सहमति बनाना जरूरी होगा।

संसद ने वर्ष 2023 में महिला आरक्षण से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक पारित किया था। इस कानून के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित करने का प्रावधान किया गया। लेकिन इसके क्रियान्वयन को अगली जनगणना और उसके बाद होने वाले परिसीमन से जोड़ दिया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि कानून पारित होने के बावजूद महिलाओं को इसका लाभ तत्काल नहीं मिल सका। अब सरकार यदि इसके लागू होने की प्रक्रिया में बदलाव करना चाहती है तो उसे संसद में संशोधन संबंधी प्रावधानों पर विचार करना होगा।

महिला आरक्षण का मुद्दा किसी एक दल या सरकार तक सीमित नहीं है। संसद में इस विधेयक को पारित कराने के समय विभिन्न राजनीतिक दलों ने महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता स्वीकार की थी। ऐसे में इसके क्रियान्वयन को लेकर भी व्यापक सहमति बननी चाहिए। देश की आधी आबादी को राजनीतिक निर्णय प्रक्रिया में पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने की बात लंबे समय से उठती रही है। पंचायतों और स्थानीय निकायों में आरक्षण के बाद महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। अनेक महिलाएं स्थानीय स्तर पर नेतृत्व कर रही हैं और विकास से जुड़े फैसलों में अपनी भूमिका निभा रही हैं। अब यही भागीदारी संसद और विधानसभाओं में भी प्रभावी रूप से दिखाई देने की अपेक्षा है। इस पूरी प्रक्रिया में परिसीमन का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। परिसीमन के माध्यम से लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों की सीमाएं तथा सीटों की संख्या निर्धारित की जाती है। इसका उद्देश्य जनसंख्या और प्रतिनिधित्व के बीच संतुलन बनाए रखना होता है। भारत में जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित करने के लिए लंबे समय तक परिसीमन को स्थगित रखा गया। वर्ष 1976 में संवैधानिक संशोधन के माध्यम से लोकसभा और विधानसभाओं की सीटों के पुनर्निर्धारण पर रोक लगाई गई, जिसे बाद में 2001 में फिर आगे बढ़ाया गया। मौजूदा व्यवस्था के अनुसार यह रोक वर्ष 2026 के बाद होने वाली पहली जनगणना के प्रासंगिक आंकड़े प्रकाशित होने तक लागू है।

परिसीमन को लेकर दक्षिण भारत के कई राज्यों की चिंता लंबे समय से सामने आती रही है। उनका तर्क है कि जिन राज्यों ने शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार नियोजन के क्षेत्र में बेहतर परिणाम हासिल किए तथा जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया, उन्हें नए परिसीमन में राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिहाज से नुकसान नहीं होना चाहिए। यदि सीटों का निर्धारण केवल जनसंख्या के अनुपात में किया जाता है तो अधिक आबादी वाले राज्यों की सीटों में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हो सकती है। इससे संसद में विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधित्व का मौजूदा संतुलन बदलने की आशंका जताई जाती है।

इसी चिंता के समाधान के लिए सभी राज्यों की लोकसभा सीटों में समान अनुपात से वृद्धि का प्रस्ताव चर्चा में है। यदि प्रत्येक राज्य की सीटें 50 प्रतिशत बढ़ाई जाती हैं तो मौजूदा अनुपात को बनाए रखने में मदद मिल सकती है। हालांकि इस व्यवस्था का अंतिम स्वरूप, संवैधानिक आधार और व्यावहारिक प्रभाव संसद में स्पष्ट होना चाहिए। केवल राजनीतिक आश्वासन के बजाय विधेयक में स्पष्ट प्रावधान होने से राज्यों की आशंकाओं का समाधान करने में सहायता मिल सकती है। परिसीमन जैसी व्यापक प्रक्रिया में सभी राज्यों की भागीदारी और विश्वास जरूरी है।

विपक्ष की ओर से यह तर्क भी दिया जाता रहा है कि महिला आरक्षण को लागू करने के लिए परिसीमन की प्रतीक्षा किए बिना मौजूदा 543 लोकसभा सीटों में ही 33 प्रतिशत आरक्षण लागू किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण पर भी गंभीर चर्चा होनी चाहिए। एक ओर देश की आबादी बढ़ने के साथ संसदीय क्षेत्रों में मतदाताओं की संख्या भी बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर सीटों की संख्या लंबे समय से लगभग स्थिर बनी हुई है। ऐसे में प्रतिनिधित्व का विस्तार एक अलग महत्वपूर्ण प्रश्न है। सरकार और विपक्ष को यह देखना होगा कि महिला आरक्षण और परिसीमन के बीच ऐसा संतुलन कैसे बनाया जाए, जिससे महिलाओं को समय पर प्रतिनिधित्व मिले और राज्यों के बीच राजनीतिक संतुलन भी प्रभावित न हो।

वर्ष 2023 में महिला आरक्षण कानून पारित करते समय यह उम्मीद जताई गई थी कि अगली जनगणना और परिसीमन के बाद इसे लागू किया जाएगा। कोविड महामारी के कारण जनगणना की प्रक्रिया प्रभावित हुई और इसके चलते समय-सीमा को लेकर अनिश्चितता बनी रही। अब यदि सरकार चाहती है कि वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव तक महिलाओं को आरक्षण का लाभ मिले तो उसे कानूनी और प्रशासनिक प्रक्रिया के संबंध में स्पष्टता लानी होगी। इसके लिए संसद में विधेयक प्रस्तुत करने के साथ सभी संवैधानिक पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

महिला आरक्षण का वास्तविक उद्देश्य केवल संसद में महिलाओं की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि नीति निर्माण में उनकी भागीदारी को मजबूत करना है। राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने से शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा, रोजगार और सामाजिक कल्याण जैसे विषयों को अधिक प्रतिनिधित्व मिल सकता है। हालांकि यह मान लेना भी उचित नहीं होगा कि किसी विषय पर महिला जनप्रतिनिधि हमेशा एक जैसी राय रखेंगी। उनकी प्राथमिकताएं क्षेत्र, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक विचारधारा के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं। फिर भी निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की संख्या बढ़ने से लोकतंत्र में विविध अनुभवों और दृष्टिकोणों को स्थान मिलेगा। यह भी ध्यान रखना होगा कि आरक्षण लागू होने के बाद महिलाओं को केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व तक सीमित न रखा जाए। उन्हें राजनीतिक दलों में संगठनात्मक जिम्मेदारियां, चुनाव लड़ने के अवसर और निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिए। संसद और विधानसभाओं में चुनी गई महिलाओं को अपने क्षेत्र और मतदाताओं के प्रति स्वतंत्र रूप से जवाबदेह रहने का अवसर मिलना चाहिए। तभी आरक्षण का उद्देश्य वास्तविक रूप से पूरा हो सकेगा।

सरकार के लिए यह जरूरी है कि वह महिला आरक्षण और परिसीमन से जुड़े विधेयकों पर विपक्षी दलों के साथ खुला संवाद करे। विपक्ष को भी इस विषय को केवल सत्ता पक्ष की राजनीतिक पहल के रूप में देखने के बजाय उसके संवैधानिक और सामाजिक महत्व पर विचार करना चाहिए। परिसीमन के प्रभाव, राज्यों के प्रतिनिधित्व और आरक्षण लागू करने की समय-सीमा पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन इनका समाधान चर्चा और सहमति से निकाला जाना चाहिए। संसद का काम केवल विधेयक पारित करना नहीं, बल्कि ऐसे कानून बनाना भी है जिन पर देश के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों का भरोसा कायम रहे।

चुनाव प्रक्रिया और मतदाता सूची से जुड़े विवादों के बीच महिला आरक्षण का मुद्दा भी राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन सकता है। विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर विपक्ष ने सवाल उठाए हैं, जबकि चुनाव आयोग का कहना है कि पात्र मतदाताओं को सूची में शामिल करने और आपत्तियों के निस्तारण के लिए निर्धारित प्रक्रिया उपलब्ध है। इन विषयों पर भी आरोप-प्रत्यारोप के बजाय पारदर्शिता और संवैधानिक संस्थाओं की जवाबदेही को महत्व दिया जाना चाहिए।

महिला आरक्षण पर संसद की सहमति एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक संदेश थी। अब उस सहमति को वास्तविक प्रतिनिधित्व में बदलने की जिम्मेदारी सभी राजनीतिक दलों की है। सरकार को विधेयकों का स्पष्ट प्रारूप सामने रखना चाहिए और विपक्ष को भी अपनी आपत्तियों के साथ व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने चाहिए। देश की महिलाओं से किया गया वादा तभी पूरा होगा, जब कानून का लाभ तय समय में जमीन पर दिखाई देगा। संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना किसी एक दल की उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने की सामूहिक जिम्मेदारी है।

टेक्नॉलॉजी

आईफोन मिलने का झांसा देकर खाली कर रहे खाते, फर्जी लिंक से रहें सतर्क

मोबाइल फोन चोरी होना या कहीं गुम हो जाना अपने आप में बड़ी परेशानी है, लेकिन अब साइबर अपराधी इसी मुश्किल को ठगी का हथियार बना रहे हैं। खासतौर पर आईफोन इस्तेमाल करने वाले लोगों को निशाना बनाकर उन्हें 'आपका आईफोन मिल गया है' या 'आपका फोन ब्लॉक कर दिया गया है' जैसे संदेश भेजे जा रहे हैं। फोन वापस मिलने की उम्मीद में लोग इन संदेशों पर भरोसा कर लेते हैं और दिए गए लिंक पर क्लिक कर बैठते हैं। इसके बाद उनकी एप्पल आईडी, पासवर्ड और ओटीपी जैसी गोपनीय जानकारियां हासिल करने की कोशिश की जाती है। साइबर अपराधियों का यह तरीका लोगों की निजी जानकारी और डिजिटल सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है। ऐसे मामलों को लेकर इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (आई4सी) और गृह मंत्रालय की ओर से भी सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

साइबर ठग चोरी या गुम हुए आईफोन के मालिकों की तलाश कर उन्हें फर्जी एसएमएस और ईमेल भेजते हैं। संदेश में दावा किया जाता है कि उनका फोन मिल गया है, उसे ट्रेस कर लिया गया है या सुरक्षा कारणों से ब्लॉक कर दिया गया है। इसके बाद फोन की लोकेशन देखने, उसे अनलॉक कराने या वापस पाने के नाम पर एक लिंक भेजा जाता है। देखने में यह लिंक एप्पल की आधिकारिक वेबसाइट जैसा लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह फर्जी वेबसाइट पर ले जाता है। वहां यूजर से एप्पल आईडी, पासवर्ड, मोबाइल नंबर और अन्य संवेदनशील जानकारियां भरने को कहा जाता है। कई बार वेरिफिकेशन के बहाने ओटीपी या सुरक्षा कोड भी मांगा जाता है।

इस तरह की ठगी का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि अपराधी पीड़ित की परेशानी और भावनाओं का फायदा उठाते हैं। फोन खोने के बाद व्यक्ति लगातार उसके वापस मिलने की उम्मीद करता है। ऐसे में जब अचानक कोई संदेश आता है कि उसका आईफोन मिल गया है तो वह बिना पूरी जांच किए उस पर भरोसा कर सकता है। ठग इसी जल्दबाजी का लाभ उठाते हैं। वे संदेश को इस तरह तैयार करते हैं कि वह किसी आधिकारिक सूचना जैसा दिखाई दे। कई बार संदेश के अंत में एप्पल सपोर्ट का नाम लिख दिया जाता है, ताकि यूजर को लगे कि संपर्क कंपनी की ओर से किया गया है। लेकिन केवल किसी कंपनी का नाम या लोगो लिखे होने से संदेश असली साबित नहीं होता। साइबर सिक्योरिटी एडवाइजर राहुल मिश्रा के अनुसार, ठग कई माध्यमों से आईफोन मालिकों की जानकारी जुटाते हैं। अक्सर लोग मोबाइल चोरी होने या गुम होने के बाद सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी साझा कर देते हैं। कुछ लोग पोस्ट में फोन का मॉडल, रंग, गुम होने की जगह और संपर्क नंबर तक लिख देते हैं। साइबर अपराधी ऐसी पोस्ट और ऑनलाइन समूहों पर नजर रखते हैं। उन्हें जैसे ही किसी व्यक्ति के आईफोन गुम होने की जानकारी मिलती है, वे उसी के अनुरूप फर्जी संदेश तैयार कर भेज सकते हैं। इस तरह सामान्य दिखने वाली सोशल मीडिया पोस्ट भी किसी व्यक्ति को साइबर ठगों के निशाने पर ला सकती है।

आईफोन में मौजूद फाइंड माई फीचर का भी इस तरह के मामलों में गलत इस्तेमाल किए जाने की आशंका रहती है। इस सुविधा के जरिए फोन खोने पर उसे लोकेट करने, लॉक करने और लॉस्ट मोड सक्रिय करने का विकल्प मिलता है। लॉस्ट मोड में फोन की स्क्रीन पर संपर्क के लिए वैकल्पिक नंबर दिखाया जा सकता है, ताकि फोन मिलने पर कोई व्यक्ति मालिक से संपर्क कर सके। लेकिन यही संपर्क जानकारी ठगों के हाथ लग जाए तो वे सीधे फोन के मालिक तक पहुंचने की कोशिश कर सकते हैं। वे खुद को फोन खोजने वाला व्यक्ति या किसी सहायता सेवा का प्रतिनिधि बताकर बातचीत शुरू कर सकते हैं और फिर धीरे-धीरे गोपनीय जानकारी मांग सकते हैं।

इसके अलावा इंटरनेट पर उपलब्ध व्यक्तिगत जानकारियों और पुराने डेटा लीक के जरिए भी अपराधी लोगों के मोबाइल नंबर तथा ईमेल पते जुटा सकते हैं। फोन गुम होने के कुछ समय बाद वे संबंधित व्यक्ति को संदेश भेजते हैं। उसमें फोन मिलने, उसकी लोकेशन उपलब्ध होने, डिवाइस ब्लॉक किए जाने या दोबारा एक्सेस देने का दावा किया जाता है। इसके बाद यूजर को किसी लिंक पर क्लिक करने, एप्पल अकाउंट से डिवाइस हटाने या वेरिफिकेशन पूरा करने के लिए कहा जाता है। कई बार यह भी कहा जाता है कि निर्धारित समय में प्रक्रिया पूरी नहीं की तो फोन दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। इस तरह डर और जल्दबाजी पैदा करके व्यक्ति से गलत कदम उठवाने की कोशिश की जाती है।

आईफोन खोने की स्थिति में सबसे जरूरी बात यह है कि किसी अनजान संदेश या लिंक के जरिए फोन वापस पाने की कोशिश न करें। एप्पल आईडी और पासवर्ड किसी व्यक्ति के साथ साझा नहीं करना चाहिए। इसी तरह ओटीपी, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन कोड या डिवाइस का पासकोड भी किसी अनजान व्यक्ति को नहीं बताना चाहिए। कोई व्यक्ति खुद को एप्पल सपोर्ट का कर्मचारी बताकर ये जानकारियां मांगे, तब भी सतर्क रहना जरूरी है। कंपनी के नाम से आए संदेश की सत्यता जांचने के लिए उसके लिंक पर जाने के बजाय आधिकारिक वेबसाइट या अपने डिवाइस में उपलब्ध विश्वसनीय विकल्पों का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

यदि फोन चोरी हो गया है तो फाइंड माई के माध्यम से उसे लॉस्ट मोड में डालना उपयोगी कदम हो सकता है। जरूरत पड़ने पर संबंधित मोबाइल नेटवर्क ऑपरेटर से संपर्क कर सिम कार्ड बंद कराया जा सकता है। चोरी की शिकायत पुलिस में दर्ज कराने के साथ भारत सरकार के संचार साथी पोर्टल के जरिए भी चोरी या गुम हुए मोबाइल को ब्लॉक कराने की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। इसके लिए मोबाइल का आईएमईआई नंबर और आवश्यक विवरण सुरक्षित रखना चाहिए। फोन वापस मिलने का दावा करने वाले किसी अनजान व्यक्ति से मिलने या कोई प्रक्रिया पूरी करने से पहले उसकी पहचान की पुष्टि करना भी जरूरी है।

विचार प्रवाह

फैशन डिजाइनिंग में करियर का मौका एनआईएफटी प्रवेश परीक्षा की आवेदन तिथि बढ़ी

फैशन डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए राहत भरी खबर है। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंट्रेंस एग्जामिनेशन (एनआईएफटीईई-2027) के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। पहले अभ्यर्थियों को बिना विलंब शुल्क के आवेदन करने के लिए 16 नवंबर 2026 तक का समय दिया गया था, लेकिन अब इसे बढ़ाकर 24 नवंबर 2026 कर दिया गया है। इस फैसले से उन विद्यार्थियों को अतिरिक्त अवसर मिल गया है, जो किसी कारणवश निर्धारित समय में आवेदन प्रक्रिया पूरी नहीं कर पाए थे। फैशन डिजाइनिंग, टेक्नोलॉजी और मैनेजमेंट से जुड़े पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक अभ्यर्थियों के पास अब आवेदन करने का मौका है। ऐसे में विद्यार्थियों को अंतिम तारीख का इंतजार किए बिना जल्द से जल्द पंजीकरण और आवेदन की प्रक्रिया पूरी कर लेनी चाहिए। एनआईएफटी देश के प्रमुख फैशन शिक्षा संस्थानों में शामिल है। यहां से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को फैशन डिजाइनिंग, टेक्सटाइल, परिधान निर्माण, फैशन प्रबंधन और इससे जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में करियर बनाने का अवसर मिलता है। बदलते दौर में फैशन उद्योग का दायरा तेजी से बढ़ा है। अब यह क्षेत्र केवल कपड़ों की डिजाइनिंग तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसमें टेक्नोलॉजी, बाजार प्रबंधन, ब्रांडिंग, रिटेल, टेक्सटाइल इनोवेशन और निर्यात जैसे अनेक क्षेत्र भी शामिल हो गए हैं। इसी कारण युवाओं के बीच एनआईएफटी के पाठ्यक्रमों को लेकर आकर्षण बढ़ रहा है। एनआईएफटीईई-2027 के माध्यम से अभ्यर्थियों को स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तर के विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश पाने का अवसर मिलेगा।

आवेदन करने से पहले विद्यार्थियों को संबंधित पाठ्यक्रम की शैक्षणिक योग्यता और अन्य पात्रता शर्तों की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए। स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए 12वीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। वहीं, स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी का मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक होना जरूरी है। पीएचडी कार्यक्रम में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के पास संबंधित विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री होनी चाहिए। अलग-अलग पाठ्यक्रमों के लिए पात्रता की शर्तों में अंतर हो सकता है, इसलिए आवेदन करने से पहले आधिकारिक सूचना में दिए गए नियमों को ध्यान से पढ़ना जरूरी है। केवल आवेदन कर देना प्रवेश की पात्रता की गारंटी नहीं है, अभ्यर्थियों को संबंधित पाठ्यक्रम की सभी शर्तें पूरी करनी होंगी। एनआईएफटीईई-2027 के लिए आवेदन शुल्क भी पाठ्यक्रम और अभ्यर्थी की श्रेणी के अनुसार निर्धारित किया गया है। बी.डिजाइन, बी.एफ.टेक, एम.एफ.एम., एम.डिजाइन, एम.एफ.टेक और पीएचडी कार्यक्रमों के लिए सामान्य, ओबीसी तथा ईडब्ल्यूएस वर्ग के अभ्यर्थियों को 2,000 रुपये आवेदन शुल्क जमा करना होगा। वहीं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और दिव्यांग श्रेणी के अभ्यर्थियों के लिए शुल्क 500 रुपये निर्धारित किया गया है। यदि कोई अभ्यर्थी एक से अधिक कार्यक्रमों के लिए आवेदन करना चाहता है तो उसके लिए अलग शुल्क व्यवस्था लागू होगी। बी.एफ.टेक और बी.डिजाइन अथवा एम.एफ.एम. और एम.डिजाइन कार्यक्रमों के संयोजन के लिए सामान्य, ओबीसी और ईडब्ल्यूएस वर्ग के अभ्यर्थियों को 3,000 रुपये जमा करने होंगे। इसी श्रेणी में एससी, एसटी और दिव्यांग अभ्यर्थियों के लिए आवेदन शुल्क 750 रुपये रखा गया है। एनआरआई, विदेशी नागरिक, ओसीआई, पीआईओ और सार्क देशों के अभ्यर्थियों के लिए आवेदन शुल्क 11,100 रुपये निर्धारित किया गया है।

ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया पूरी करने के लिए विद्यार्थियों को सबसे पहले एनटीए की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा। इसके लिए exams.nta.nic.in/niftee/ पर लॉगइन करना होगा। वेबसाइट के होम पेज पर उपलब्ध कैंडिडेट एक्टिविटी सेक्शन में एनआईएफटीईई-2027 से संबंधित लिंक दिखाई देगा। अभ्यर्थी को जिस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना है, उससे संबंधित विकल्प का चयन करना होगा। इसके बाद न्यू रजिस्ट्रेशन पर क्लिक करके पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी करनी होगी। पंजीकरण के दौरान मांगी गई बुनियादी जानकारी भरने के बाद अभ्यर्थी को लॉगइन संबंधी विवरण प्राप्त होंगे। इन विवरणों की सहायता से आगे की आवेदन प्रक्रिया पूरी की जा सकेगी।

पंजीकरण के बाद अभ्यर्थियों को आवेदन फॉर्म में व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक विवरण और अन्य आवश्यक जानकारियां सावधानीपूर्वक भरनी होंगी। इसके साथ ही निर्धारित प्रारूप में आवश्यक दस्तावेज और फोटो आदि अपलोड करने होंगे। फॉर्म भरते समय नाम, जन्मतिथि, संपर्क विवरण और शैक्षणिक जानकारी का मिलान अपने प्रमाणपत्रों से कर लेना चाहिए, ताकि आगे किसी तरह की परेशानी न हो।

फैक्ट ऑफ द डे

दमदार अभिनय और शास्त्रीय नृत्य से पहचान बनाने वाली मीनाक्षी शेषाद्रि

भारतीय सिनेमा में कुछ अभिनेत्रियां ऐसी रही हैं, जिन्होंने अपनी खूबसूरती के साथ अभिनय क्षमता, नृत्य कौशल और प्रभावशाली व्यक्तित्व से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई। मीनाक्षी शेषाद्रि ऐसी ही एक अभिनेत्री हैं, जिन्होंने 1980 और 1990 के दशक में हिंदी फिल्मों में अपनी अलग पहचान स्थापित की। कभी मिस इंडिया का खिताब जीतकर सुर्खियों में आईं मीनाक्षी ने बड़े पर्दे पर कई यादगार किरदार निभाए। रोमांटिक फिल्मों से लेकर पारिवारिक कहानियों और गंभीर सामाजिक विषयों पर आधारित फिल्मों तक, उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रभाव छोड़ा। फिल्म 'हीरो' से मिली लोकप्रियता ने उन्हें रातोंरात स्टार बना दिया, जबकि 'दामिनी' में निभाए गए उनके किरदार ने उन्हें एक सशक्त अभिनेत्री के रूप में स्थापित किया। अपने करियर के शिखर पर रहते हुए फिल्मी दुनिया से दूरी बनाने का उनका फैसला भी उतना ही चर्चित रहा, जितना उनका सिनेमाई सफर।

मीनाक्षी शेषाद्रि का जन्म 16 नवंबर 1963 को बिहार के सिंदरी में एक तमिल भाषी परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम शशिकला शेषाद्रि था। बचपन से ही उन्हें कला और नृत्य में रुचि थी। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य की चार प्रमुख विधाओं भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, कथक और ओडिसी का प्रशिक्षण लिया। इस दौरान उन्होंने प्रसिद्ध नृत्य गुरुओं से मार्गदर्शन प्राप्त किया। शास्त्रीय नृत्य की गहरी समझ ने आगे चलकर उनके फिल्मी अभिनय को भी विशेष पहचान दी। उनके नृत्य में केवल आकर्षक मुद्राएं ही नहीं, बल्कि भावों की अभिव्यक्ति और



लय का संतुलन भी दिखाई देता था।

मीनाक्षी के जीवन में बड़ा मोड़ वर्ष 1981 में आया, जब उन्होंने मात्र 17 वर्ष की उम्र में ईव्स वीकली मिस इंडिया प्रतियोगिता जीत ली। इस उपलब्धि के बाद उन्हें देशभर में पहचान मिली। मिस इंडिया बनने के बाद उन्होंने जापान के टोक्यो में आयोजित मिस इंटरनेशनल प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। सौंदर्य प्रतियोगिता में मिली सफलता ने उनके लिए मनोरंजन जगत के दरवाजे खोल दिए। इसी दौरान उन्होंने फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाने का निर्णय लिया और अभिनय की दुनिया में कदम रखा।

वर्ष 1983 में मीनाक्षी ने फिल्म 'पेंटर बाबू' से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की। इस फिल्म का निर्माण मनोज कुमार ने किया था। हालांकि उनकी पहली फिल्म दर्शकों के बीच खास प्रभाव नहीं छोड़ पाई, लेकिन उसी वर्ष आई फिल्म 'हीरो' ने उनकी तकदीर बदल दी। सुभाष घई के निर्देशन में बनी इस फिल्म में उन्होंने जैकी श्रॉफ के साथ काम किया। दोनों कलाकार नए थे, लेकिन फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। 'हीरो' की सफलता ने मीनाक्षी को रातोंरात लोकप्रिय अभिनेत्री बना दिया। इसके बाद उनके पास फिल्मों के प्रस्ताव आने लगे और वह तेजी से हिंदी सिनेमा की चर्चित अभिनेत्रियों में शामिल हो गईं।

शुरुआती दौर में उन्होंने 'लव मैरिज', 'पैसा ये पैसा', 'लवर बॉय' और 'आवारा बाप' जैसी फिल्मों में काम किया। राजेश खन्ना के साथ उनकी जोड़ी भी पर्दे पर दिखाई दी। फिल्

आदिवासी समाज का बलिदान देश की अमूल्य विरासत, उनकी शहादत कभी भुलाई नहीं जा सकती : सी.आर. पाटिल

सूरत। देश की आजादी के संघर्ष में आदिवासी समाज का योगदान, उसका बलिदान और अपनी संस्कृति एवं अधिकारों की रक्षा के लिए किया गया संघर्ष भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आदिवासी समुदाय की शहादत और देश के प्रति उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। यह बात केंद्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल ने शनिवार, 15 नवंबर को सूरत के पाल स्थित संजीव कुमार ऑडिटोरियम में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कही। भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में आदिवासी समाज के स्वतंत्रता सेनानियों, उनके संघर्ष और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को याद किया गया। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों और खेलों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी वीडियो संदेश के माध्यम से देशवासियों को संबोधित किया।

समारोह में केंद्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल की विशेष उपस्थिति रही। उनके साथ भाजपा के प्रदेश महासचिव प्रशांत कोराट, सूरत के महापौर, स्थायी समिति के अध्यक्ष, नगर निगम आयुक्त सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, अधिकारी और आदिवासी समुदाय के बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरुआत जनजातीय गौरव और भगवान बिरसा मुंडा के योगदान को स्मरण करने के साथ हुई। इस दौरान आदिवासी कलाकारों ने पारंपरिक लोकनृत्य प्रस्तुत कर अपनी संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं की सुंदर झलक पेश की। पारंपरिक वेशभूषा और लोक संगीत के बीच प्रस्तुत नृत्यों ने समारोह में जनजातीय सांस्कृतिक पहचान को प्रमुखता से सामने रखा।



कार्यक्रम में आदिवासी समाज के लोगों ने सरकारी योजनाओं से मिले लाभ और अपने अनुभव भी साझा किए। लाभार्थियों ने बताया कि विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से उन्हें किस प्रकार सहायता मिली और उनके जीवन में क्या बदलाव आए। इस अवसर पर शिक्षा, खेल और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा एवं मेहनत से उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों को केंद्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल ने सम्मानित किया। प्रतिभाओं का सम्मान कर उनके प्रयासों को पहचान दी गई। आयोजन के माध्यम से आदिवासी समाज के ऐतिहासिक योगदान के साथ वर्तमान पीढ़ी की उपलब्धियों को भी सामने लाने का प्रयास किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो संदेश के जरिए समारोह को संबोधित करते हुए भगवान बिरसा मुंडा और उनके परिवार के बलिदान को याद किया। उन्होंने आदिवासी समाज के उन नायकों को नमन किया, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता, समाज के अधिकारों और सम्मान के लिए संघर्ष किया। प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा कि आदिवासी समुदाय का योगदान भारतीय इतिहास का गौरवपूर्ण हिस्सा है और ऐसे नायकों को उचित सम्मान देना आवश्यक है। उन्होंने अपने संबोधन में यह भी कहा कि देश में 50 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। प्रधानमंत्री ने इस आंकड़े को देश में हुए बदलावों के संदर्भ में प्रस्तुत किया।

केंद्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल ने अपने संबोधन में भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष को याद करते हुए कहा कि उन्होंने देश की आजादी और आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होंने अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए समाज को अपने अधिकारों और स्वाभिमान के प्रति जागरूक किया। पाटिल ने कहा कि बिरसा मुंडा केवल आदिवासी समाज के नायक नहीं, बल्कि पूरे देश के महान शहीद हैं। उनका जीवन और संघर्ष हर भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने आदिवासी समुदाय के बलिदान को देश के इतिहास की अमूल्य विरासत बताते हुए कहा कि उनकी शहादत और योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

पाटिल ने अपने संबोधन में अंग्रेजों के अत्याचारों का उल्लेख करते हुए उनके परिवार के सदस्यों और छोटे बच्चों को भी फांसी दिए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज ने अपने अधिकारों, जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया है। स्वतंत्रता आंदोलन में आदिवासी नायकों की भूमिका को इतिहास में वह स्थान मिलना चाहिए, जिसके वे हकदार हैं। उनके अनुसार, भगवान बिरसा मुंडा का संघर्ष किसी एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं था, बल्कि वह देश की स्वतंत्रता और स्वाभिमान से जुड़ा हुआ था।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आदिवासी समाज के नायकों और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को उचित सम्मान देने का प्रयास किया गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री के संबोधन में बताए गए 50 करोड़ से अधिक लोगों के गरीबी से बाहर आने के आंकड़े का उल्लेख करते हुए इसे देश के लिए गर्व का विषय बताया। पाटिल ने कहा कि आदिवासी समाज के ऐतिहासिक योगदान को याद करने के साथ उसके वर्तमान विकास और भविष्य की संभावनाओं पर भी ध्यान देना जरूरी है।

भगवान बिरसा मुंडा का नाम भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में विशेष स्थान रखता है। उन्होंने 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में ब्रिटिश शासन और आदिवासी समुदायों के अधिकारों पर हो रहे अतिक्रमण के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया था। उनका संघर्ष जल, जंगल और जमीन पर आदिवासियों के अधिकारों तथा सामाजिक सम्मान से जुड़ा था। जनजातीय गौरव दिवस के आयोजन का उद्देश्य ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों और जनजातीय नायकों को स्मरण करना है, जिनके योगदान को लंबे समय तक व्यापक पहचान नहीं मिल सकी।

सूरत में आयोजित समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, लाभार्थियों के अनुभवों और प्रतिभाओं के सम्मान के माध्यम से आदिवासी समाज के अतीत और वर्तमान दोनों पक्षों को स्थान दिया गया। एक ओर भगवान बिरसा मुंडा के बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समाज की भूमिका को याद किया गया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, खेल और विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे लोगों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि आदिवासी समाज की पहचान केवल उसके गौरवशाली इतिहास से नहीं, बल्कि उसकी जीवंत संस्कृति, प्रतिभा और सामाजिक योगदान से भी बनती है।

आर्थिक संकट में बंद अखबारों की वेबसाइटों को मिलेगा नया जीवन, HPCMF ने शुरू की मुफ्त डिजिटल सेवा

नई दिल्ली। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण डिजिटल दुनिया से दूर हो चुके छोटे और क्षेत्रीय समाचार-पत्रों के लिए राहत की पहल की गई है। अब ऐसे प्रकाशनों की बंद पड़ी वेबसाइटों को दोबारा शुरू करने और उन अखबारों को डिजिटल मंच उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है, जो तकनीकी खर्च वहन नहीं कर पाने के कारण इंटरनेट पर अपनी मौजूदगी दर्ज नहीं करा सके। हरिश्चंद्र प्रेस क्लब एंड मीडिया फाउंडेशन (HPCMF) ने देशभर के प्रेस रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया (PRGI) में पंजीकृत समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के लिए निःशुल्क ई-पेपर वेबसाइट निर्माण तथा तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराने की पहल की घोषणा की है। इसके तहत वेबसाइट बनाने, होस्टिंग, डिजाइन, जरूरी प्लगइन, पुराने डेटा को स्थानांतरित करने और तकनीकी रखरखाव जैसी सुविधाओं में सहायता देने की योजना है। विशेष रूप से छोटे, जिला स्तरीय, क्षेत्रीय और स्वतंत्र प्रकाशनों को प्राथमिकता देने की बात कही गई है। डिजिटल पत्रकारिता के तेजी से बढ़ते दायरे में अब समाचार-पत्रों के लिए केवल प्रिंट संस्करण प्रकाशित करना ही पर्याप्त नहीं रह गया है। पाठकों का एक बड़ा वर्ग समाचारों और सूचनाओं के लिए इंटरनेट पर निर्भर होता जा रहा है। ऐसे में स्थानीय और क्षेत्रीय अखबारों के सामने भी अपनी खबरों को डिजिटल माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने की जरूरत बढ़ी है। लेकिन वेबसाइट तैयार करने और उसे नियमित रूप से चलाने का खर्च कई छोटे प्रकाशनों के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। डोमेन, होस्टिंग, वेबसाइट डिजाइन, सुरक्षा, सॉफ्टवेयर और तकनीकी रखरखाव पर लगातार खर्च करना पड़ता है। सीमित आय और संसाधनों के कारण कई प्रकाशन इस व्यवस्था को लंबे समय तक जारी नहीं रख पाते। कुछ की वेबसाइटें बंद हो चुकी हैं, जबकि कई अखबार आज भी डिजिटल मंच शुरू करने की योजना को खर्च के कारण अमलीजामा नहीं पहना सके हैं।

इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए HPCMF ने यह पहल शुरू करने की घोषणा की है। संस्था के मुताबिक, इसका उद्देश्य आर्थिक कठिनाइयों से बंद हुई अखबारी वेबसाइटों को फिर से सक्रिय करना और उन पंजीकृत प्रकाशनों को डिजिटल पहचान दिलाने में मदद करना है, जिनके पास वेबसाइट निर्माण एवं संचालन के लिए पर्याप्त तकनीकी या आर्थिक व्यवस्था नहीं है। पहले चरण में PRGI के अंतर्गत पंजीकृत समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं को इस सुविधा में शामिल करने की योजना है। PRGI का नाम पहले रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स फॉर इंडिया (RNI) था।

संस्था की प्रस्तावित व्यवस्था केवल वेबसाइट के लिए जगह उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं होगी। इसके अंतर्गत प्रकाशनों को एक तैयार डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराने के लिए वेबसाइट निर्माण और प्रारंभिक सेटअप में सहयोग दिया जाएगा। वेबसाइट की डिजाइन, उपयुक्त थीम, आवश्यक प्लगइन और सॉफ्टवेयर का कॉन्फिगरेशन भी इसमें शामिल रहेगा। इसके साथ होस्टिंग, एसएसएल प्रमाणपत्र, सुरक्षा व्यवस्था और बैकअप जैसी तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है। जिन समाचार-पत्रों की वेबसाइट पहले से संचालित थी, लेकिन आर्थिक या अन्य कारणों से बंद हो गई, उनके पुराने डेटा और उपलब्ध सामग्री को नई होस्टिंग पर स्थानांतरित करने में भी तकनीकी सहायता देने का प्रयास किया जाएगा।

वेबसाइट शुरू होने के बाद भी प्रकाशनों को तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई है। इसका उद्देश्य यह है कि वेबसाइट तैयार होने के कुछ समय बाद तकनीकी समस्या आने पर प्रकाशक फिर से उसी परेशानी में न फंसें। वेबसाइट में जरूरी बदलाव, तकनीकी दिक्कतों के समाधान और निर्धारित दायरे में रखरखाव के लिए निःशुल्क मदद देने की बात कही गई है। इससे उन छोटे प्रकाशनों को लाभ मिल सकता है, जिनके पास अलग से वेबसाइट प्रबंधन के लिए कर्मचारी या तकनीकी विशेषज्ञ नियुक्त करने की व्यवस्था नहीं है।

HPCMF की इस पहल में तीन तरह के प्रकाशनों को विशेष रूप से शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। पहले वर्ग में वे अखबार और पत्रिकाएं हैं, जिनकी वेबसाइट आर्थिक कारणों से बंद हो चुकी है और वे उसे दोबारा शुरू करना चाहते हैं। दूसरे वर्ग में ऐसे प्रकाशन हैं, जिनकी वेबसाइट अभी चल रही है, लेकिन होस्टिंग और तकनीकी रखरखाव का खर्च उठाना मुश्किल हो रहा है। तीसरे वर्ग में वे पंजीकृत समाचार-पत्र और पत्रिकाएं हैं, जिन्होंने अब तक वेबसाइट शुरू नहीं की है और डिजिटल माध्यम में प्रवेश के लिए तकनीकी सहयोग की जरूरत महसूस कर रहे हैं। संस्था का विशेष ध्यान छोटे शहरों, कस्बों, जिलों और क्षेत्रीय स्तर पर प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्रों पर रहेगा।

इस पहल का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका निःशुल्क स्वरूप है। संस्था के अनुसार, निर्धारित होस्टिंग और तकनीकी सेवाओं के लिए चयनित प्रकाशनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। हालांकि, डोमेन के पंजीकरण और उसके नवीनीकरण अथवा निर्धारित सुविधा के दायरे से बाहर किसी तृतीय-पक्ष सेवा की आवश्यकता होने पर उससे संबंधित खर्च की जानकारी पहले ही स्पष्ट कर दी जाएगी। आवेदन करने वाले प्रकाशनों को अपने पंजीकरण, स्वामित्व और अन्य आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने होंगे।

20 नवंबर से 25 हजार वोल्ट के करंट से लैस होंगे बुलेट ट्रेन के तार, सूरत-बिलिमोरा में अलर्ट

सूरत। मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना के तहत सूरत-बिलिमोरा एलिवेटेड सेक्शन पर बुलेट ट्रेन संचालन की तैयारियां एक और महत्वपूर्ण चरण में पहुंच गई हैं। नेशनल हाई-स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHSRCL) ने घोषणा की है कि इस रेलखंड के ओवरहेड बिजली के तारों को 20 नवंबर 2026 से या उसके बाद इलेक्ट्रिफाई किया जाएगा। इसके साथ ही इन तारों में 25 हजार वोल्ट की उच्च क्षमता वाली बिजली प्रवाहित होने लगेगी। इसको देखते हुए रेलवे परियोजना प्रबंधन ने आसपास रहने वाले लोगों, निर्माण कार्यों से जुड़े कर्मचारियों और आम नागरिकों के लिए सार्वजनिक सुरक्षा चेतावनी जारी की है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इलेक्ट्रिफिकेशन के बाद सभी ओवरहेड तारों को लाइव माना जाए और उनसे किसी भी तरह का संपर्क करने की कोशिश न की जाए।



NHSRCL ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के माध्यम से जारी सूचना में लोगों को विशेष सतर्कता बरतने की सलाह दी है। चेतावनी के मुताबिक, ओवरहेड तारों के पास अनधिकृत रूप से जाना, उन्हें छूना या उनके आसपास किसी भी प्रकार का काम करना बेहद खतरनाक हो सकता है। तारों में प्रवाहित होने वाली 25,000 वोल्ट की बिजली जानलेवा साबित हो सकती है। इसलिए लोगों से अपील की गई है कि वे रेलवे के विद्युतीकृत हिस्से से सुरक्षित दूरी बनाए रखें और किसी भी परिस्थिति में बिजली के उपकरणों या तारों के संपर्क में आने का प्रयास न करें। हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर में बिजली आपूर्ति की व्यवस्था सामान्य रेल सेवाओं की तुलना में अधिक तकनीकी क्षमता और विशेष सुरक्षा मानकों के अनुरूप तैयार की जा रही है। बुलेट ट्रेन के संचालन के लिए 25 किलोवोल्ट, 50 हर्ट्ज सिंगल-फेज एसी ट्रैक्शन सिस्टम का इस्तेमाल किया जाएगा। इस प्रणाली के माध्यम से ओवरहेड तारों से ट्रेन को आवश्यक विद्युत ऊर्जा मिलेगी। ट्रेन तक बिजली पहुंचाने के लिए हेवी कंपाउंड कैटेनरी सिस्टम लगाया गया है, जो तेज रफ्तार संचालन के दौरान निरंतर और स्थिर विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस आधुनिक ट्रैक्शन व्यवस्था में रीजेनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम भी शामिल किया गया है। इस तकनीक के तहत ट्रेन के ब्रेक लगाने पर उत्पन्न होने वाली ऊर्जा को दोबारा उपयोग में लाने में मदद मिलेगी। इससे ऊर्जा की बचत और परिचालन दक्षता बढ़ाने में सहायता मिलने की उम्मीद है। हाई-स्पीड ट्रेन के लिए बिजली आपूर्ति, ट्रैक्शन और ब्रेकिंग सिस्टम को इस तरह तैयार किया जा रहा है कि तेज गति पर भी संचालन के दौरान आवश्यक तकनीकी संतुलन बना रहे।

इसी परियोजना के तहत भारत की पहली स्वदेशी बुलेट ट्रेन का निर्माण बेंगलुरु में भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (BEML) द्वारा किया जा रहा है। प्रस्तावित ट्रेन को आधुनिक तकनीक और यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा है। इसकी लंबाई 202 मीटर होगी और इसमें कुल आठ कोच होंगे। ट्रेन की अधिकतम परीक्षण गति 280 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई है, जबकि इसकी प्रस्तावित परिचालन गति 249 किलोमीटर प्रति घंटा होगी। इस तरह यह देश में रेल परिवहन के क्षेत्र में तेज रफ्तार और आधुनिक तकनीक की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। यात्रियों की क्षमता के लिहाज से भी ट्रेन को आधुनिक जरूरतों के अनुरूप डिजाइन किया गया है। आठ कोच वाली इस ट्रेन में कुल 557 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होगी। इसमें सात स्टैंडर्ड क्लास और एक एग्जीक्यूटिव क्लास कोच शामिल रहेगा। यात्रियों की संख्या और परिचालन की आवश्यकता बढ़ने पर भविष्य में ट्रेन की संरचना को 16 कोच तक विस्तारित किया जा सकेगा। इससे मांग के अनुसार यात्री क्षमता बढ़ाने का विकल्प उपलब्ध रहेगा। यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रत्येक सीट पर मोबाइल फोन और लैपटॉप चार्ज करने की सुविधा दी जाएगी। इसके अलावा वाई-फाई आधारित इंफोटेनमेंट सिस्टम और एलसीडी डिस्प्ले भी लगाए जाएंगे, ताकि यात्रियों को सफर के दौरान सूचना और मनोरंजन से जुड़ी सुविधाएं मिल सकें। ट्रेन में बायो-डाइजेस्टर शौचालय की व्यवस्था होगी। दिव्यांग यात्रियों की सुविधा को भी डिजाइन में शामिल किया गया है। इसके तहत व्हीलचेयर के अनुकूल व्यवस्था, लेवल बोर्डिंग और ब्रेल साइनेज उपलब्ध कराने की योजना है, जिससे विशेष जरूरत वाले यात्रियों को यात्रा के दौरान सहूलियत मिल सके।

पेट पर चाकू के वार से बाहर आ गईं आंतें अहमदाबाद में तीन घंटे चला ऑपरेशन

अहमदाबाद। पेट पर चाकू से हुए गहरे हमले में एक व्यक्ति की आंतें शरीर से बाहर आ गईं। गंभीर हालत में उसे सरसपुर स्थित शारदाबेन जनरल हॉस्पिटल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों की टीम ने गुजराती नववर्ष की रात करीब दो बजे तीन घंटे तक आपातकालीन सर्जरी कर उसकी जान बचा ली। अस्पताल के अनुसार, ऑपरेशन सफल रहा है और मरीज की हालत अब स्थिर है तथा वह खतरे से बाहर है।



जानकारी के मुताबिक, 13 नवंबर की देर रात चाकू से पेट पर गंभीर चोट लगने के बाद मरीज को अस्पताल लाया गया था। घाव इतना गहरा था कि उसकी आंतें पेट से बाहर निकल आई थीं। इस स्थिति में मरीज की जान को तत्काल खतरा था। अस्पताल की सर्जरी विभाग की टीम ने बिना समय गंवाए उपचार शुरू किया और आपातकालीन ऑपरेशन का फैसला लिया। करीब तीन घंटे तक चली इस जटिल सर्जरी को विशेषज्ञ डॉक्टर हेमंत लेउवा, जैनम शाह, लकीर पटेल और पृथा जाधव ने अंजाम दिया। ऑपरेशन के दौरान रेजिडेंट डॉक्टर नचिकेत सखिया, जय पटेल और संयम भट्ट ने भी सहयोग किया। अस्पताल प्रशासन के मुताबिक, डॉक्टरों की टीम ने गंभीर स्थिति में आवश्यक सर्जिकल प्रक्रिया पूरी की, जिसके बाद मरीज की हालत में सुधार हुआ।

फिलहाल मरीज की स्थिति स्थिर बताई जा रही है। उसे पूरी तरह स्वस्थ होने और किसी संभावित जटिलता से बचाने के लिए अगले चार से पांच दिनों तक डॉक्टरों की निगरानी में रखा जाएगा। यह सर्जरी दिवाली और गुजराती नववर्ष के त्योहारों के दौरान हुई। उस समय अस्पताल की मेडिकल टीम के सदस्य त्योहार मनाने के बजाय आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं में जुटे रहे। देर रात आई इस गंभीर स्थिति में डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों ने तत्काल उपचार उपलब्ध कराया। त्योहारों के दौरान गुजरात में आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं पर बढ़े दबाव के बीच यह मामला सामने आया है। राज्य की '108' इमरजेंसी मेडिकल सर्विस के आंकड़ों के अनुसार, दिवाली, गुजराती नववर्ष और भाई दूज के दौरान कुल 18,513 आपातकालीन मामलों को संभाला गया। यह संख्या सामान्य दिनों के औसत से 25.67 प्रतिशत अधिक रही। गुजराती नववर्ष के दिन सड़क दुर्घटनाओं से जुड़े मामलों में विशेष रूप से बढ़ोतरी दर्ज की गई। इस दिन दुर्घटनाओं के 1,541 मामले सामने आए, जबकि सामान्य दिनों में इनका दैनिक औसत 646 रहता है। इस तरह सड़क हादसों के मामलों में 138.54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। त्योहारों के इन तीन दिनों में अहमदाबाद में सबसे अधिक 437 सड़क दुर्घटना संबंधी मामले दर्ज किए गए। 108 सेवा के आंकड़ों में त्योहारों के दौरान मारपीट और आग से जलने से जुड़ी आपातकालीन घटनाओं में भी बढ़ोतरी सामने आई। इन आंकड़ों से स्पष्ट हुआ कि उत्सव के दिनों में आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं पर सामान्य दिनों की तुलना में अधिक दबाव रहा।

सूरत रेलवे स्टेशन पर नशे की खेप का खुलासा, 27 किलो से अधिक गांजा जब्त

सूरत। रेलवे स्टेशन और ट्रेनों के माध्यम से मादक पदार्थों की तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे 'मिशन सेफ स्टेशन' अभियान के तहत सूरत रेलवे पुलिस और स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) की टीम ने एक ही दिन में दो अलग-अलग कार्रवाई कर गांजा तस्करी के प्रयासों का खुलासा किया। इन दोनों कार्रवाइयों में कुल 27.215 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया, जिसकी अनुमानित कीमत 13.60 लाख रुपये से अधिक बताई गई है। पहली कार्रवाई में पुरी-अहमदाबाद एक्सप्रेस के आरक्षित कोच में सीट के नीचे रखे दो लावारिस बैग से गांजा मिला, जबकि दूसरी कार्रवाई में रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 से ओडिशा के एक 25 वर्षीय युवक को 10.100 किलोग्राम गांजे के साथ गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने दोनों मामलों में एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई शुरू कर दी है। रेलवे स्टेशन पर मादक पदार्थों की आवाजाही रोकने के लिए पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों की ओर से लगातार निगरानी की जा रही है। इसी क्रम में रेलवे पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), एसओजी और एनडीपीएस डेडिकेटेड टीम ने स्टेशन परिसर तथा यहां से गुजरने वाली ट्रेनों में जांच अभियान चलाया। जांच के दौरान टीम को दो अलग-अलग स्थानों पर गांजे की खेप मिली। दोनों मामलों की परिस्थितियां अलग थीं, लेकिन बरामदगी ने रेलवे मार्ग से मादक पदार्थों की तस्करी की आशंका को लेकर सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता बढ़ा दी है।



पहली कार्रवाई पुरी-अहमदाबाद एक्सप्रेस में की गई। ट्रेन नंबर 12843 के व्यारा स्टेशन से गुजरने के बाद रेलवे पुलिस और आरपीएफ की टीम ने आरक्षित कोचों में जांच शुरू की। इसी दौरान बी-6 कोच में सीट नंबर 57 के नीचे दो बैग संदिग्ध हालत में रखे दिखाई दिए। इनमें एक भूरे रंग का ट्रॉली बैग था, जबकि दूसरा काले रंग का बैग था। काफी देर तक इन बैगों के संबंध में कोई यात्री सामने नहीं आया और न ही उनका कोई मालिक मौके पर मिला। इसके बाद सुरक्षा टीम ने नियमानुसार दोनों बैग की तलाशी ली।

तलाशी के दौरान बैगों के भीतर गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने कुल 17.115 किलोग्राम गांजा जब्त किया, जिसकी कीमत 8,55,750 रुपये आंकी गई है। ट्रेन के आरक्षित कोच में सीट के नीचे इस तरह मादक पदार्थों का मिलना सुरक्षा व्यवस्था के लिहाज से गंभीर मामला माना जा रहा है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि दोनों बैग ट्रेन में किसने रखे थे और गांजे की यह खेप कहां से लाई गई थी। बैगों का मालिक नहीं मिलने के कारण जांचकर्ताओं के सामने यह भी चुनौती है कि इस खेप को किस यात्री या तस्कर ने स्टेशन अथवा किसी अन्य स्थान से ट्रेन में रखा था। इस मामले में सूरत रेलवे पुलिस स्टेशन में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस बरामदगी से जुड़े तथ्यों की जांच कर रही है और बैगों के मालिक की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है। यह भी पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि गांजे को किस स्थान पर पहुंचाया जाना था और इसके पीछे कोई संगठित तस्करी नेटवर्क सक्रिय था या नहीं। फिलहाल इन सवालों के जवाब जांच पूरी होने के बाद ही सामने आ सकेंगे। दूसरी कार्रवाई सूरत रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 पर की गई। यहां रेलवे एसओजी और एनडीपीएस डेडिकेटेड टीम के सदस्य संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। इसी दौरान शाम करीब पांच बजे एक युवक स्पीड पार्सल ऑफिस की तरफ से बाइक पार्किंग की ओर जाता दिखाई दिया। उसके पास ट्रॉली बैग था और उसकी गतिविधियों को संदिग्ध मानते हुए टीम ने उसे रोककर पूछताछ की। इसके बाद उसके सामान की तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान युवक के ट्रॉली बैग से 10.100 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने इसकी अनुमानित कीमत 5.05 लाख रुपये बताई है। आरोपी की पहचान ओडिशा के गंजम जिले के निवासी 25 वर्षीय बुधिया उर्फ जति स्वाई के रूप में हुई। गांजे के अलावा उसके पास से 500 रुपये नकद भी जब्त किए गए। इसके बाद पुलिस ने युवक को हिरासत में लेकर उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया और आगे की जांच शुरू कर दी। पुलिस अब गिरफ्तार युवक से पूछताछ के आधार पर गांजे की खेप के स्रोत और उसके संभावित गंतव्य के बारे में जानकारी जुटाने में लगी है। जांच का एक अहम पहलू यह भी है कि आरोपी अकेले ही गांजा लेकर यात्रा कर रहा था या इसके पीछे कोई अन्य व्यक्ति अथवा तस्करी गिरोह शामिल है। गांजा उसे किसने उपलब्ध कराया, वह इसे सूरत तक किस माध्यम से लेकर पहुंचा और यहां से कहां ले जाने की योजना थी, इन सभी बिंदुओं की पड़ताल की जा रही है। हालांकि, इन पहलुओं पर अभी जांच जारी है और किसी नेटवर्क की संलिप्तता की पुष्टि नहीं हुई है। दोनों कार्रवाइयों में जब्त गांजे की कुल मात्रा 27.215 किलोग्राम है। इसमें ट्रेन से बरामद 17.115 किलोग्राम और प्लेटफॉर्म से गिरफ्तार युवक के बैग में मिला 10.100 किलोग्राम गांजा शामिल है।

वैतरणा पुल का निर्माण अंतिम चरण में, दिसंबर तक एक तरफ का काम पूरा करने का लक्ष्य

पालघर। दिल्ली-मुंबई द्रुतगति महामार्ग पर पालघर जिले में वैतरणा नदी पर बन रहे पुल का निर्माण अब अंतिम चरण में पहुंच गया है। लंबे समय से भौगोलिक चुनौतियों के कारण प्रभावित हो रहे इस काम में तेजी आने के बाद परियोजना को पूरा करने की समयसीमा भी तय कर दी गई है। निर्माण एजेंसी के मुताबिक, दिसंबर के अंत तक पुल के एक हिस्से का काम पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जबकि शेष निर्माण फरवरी तक पूरा करने की योजना है। यदि तय समयसीमा के अनुसार काम पूरा होता है तो नए साल में तलासरी से बदलापुर तक एक्सप्रेसवे पर यातायात शुरू होने की उम्मीद बढ़ जाएगी।

शुक्रवार, 13 नवंबर को पालघर जिलाधिकारी कार्यालय में पालकमंत्रियों की उपस्थिति में आयोजित सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में महामार्ग परियोजना की प्रगति की जानकारी दी गई। राज्य महामार्ग प्राधिकरण के परियोजना संचालक सुहास चिटणीस ने बताया कि वैतरणा नदी पर पुल का निर्माण महत्वपूर्ण चरण में पहुंच चुका है। दिसंबर के अंत तक एक तरफ का निर्माण पूरा करने और फरवरी तक बाकी काम समाप्त करने की तैयारी है। पुल का निर्माण पूरा होना इस पूरे मार्ग को यातायात के लिए खोलने की दिशा में सबसे अहम पड़ाव माना जा रहा है।

दिल्ली-मुंबई द्रुतगति महामार्ग का करीब 1,350 किलोमीटर लंबा मार्ग देश के प्रमुख आर्थिक और औद्योगिक केंद्रों को जोड़ने के उद्देश्य से तैयार किया जा रहा है। इसका लगभग 117 किलोमीटर हिस्सा पालघर जिले से होकर गुजरता है। जिले में तलासरी-गंजाड खंड यानी पैकेज-11 और गंजाड-मासवण खंड यानी पैकेज-12 का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इसके बावजूद मासवण-विरार खंड यानी पैकेज-13 में वैतरणा नदी पर पुल का काम बाकी रहने से पूरे मार्ग को एक साथ यातायात के लिए शुरू नहीं किया जा सका है।

वैतरणा नदी पर पुल का निर्माण इस परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कड़ियों में शामिल रहा है। नदी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण निर्माण कार्य में अपेक्षा से अधिक समय लगा। अब काम में तेजी आने के बाद अधिकारियों को उम्मीद है कि निर्धारित समय के भीतर पुल का निर्माण पूरा कर लिया जाएगा। योजना के अनुसार, शुरुआत में दोनों दिशाओं में अस्थायी रूप से यातायात शुरू करने की संभावना भी तलाशी जा रही है, ताकि यात्रियों और मालवाहक वाहनों को इस मार्ग का लाभ मिल सके।

एक्सप्रेसवे का यह हिस्सा शुरू होने से पालघर, मुंबई, ठाणे और गुजरात के बीच सड़क संपर्क को नई गति मिलने की संभावना है। फिलहाल इस क्षेत्र से गुजरने वाले वाहनों को कई स्थानों पर सामान्य राजमार्गों और भीड़भाड़ वाले रास्तों का सहारा लेना पड़ता है। नया मार्ग शुरू होने से कल्याण और भिवंडी जैसे व्यस्त यातायात क्षेत्रों में दबाव कम करने में मदद मिल सकती है। विशेष रूप से औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले मालवाहक वाहनों को वैकल्पिक और तेज मार्ग उपलब्ध होगा।

इस महामार्ग से केवल माल परिवहन ही नहीं, बल्कि निजी वाहनों और यात्री परिवहन को भी लाभ मिलने की उम्मीद है। पालघर जिले के लोगों के लिए मुंबई, ठाणे और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों तक पहुंचना आसान हो सकता है। वहीं गुजरात की ओर जाने वाले वाहनों को भी बेहतर संपर्क मार्ग मिलेगा। इससे यात्रा के समय में कमी आने के साथ परिवहन व्यवस्था अधिक सुगम होने की संभावना है।

अब परियोजना से जुड़े अधिकारियों और स्थानीय लोगों की निगाहें वैतरणा पुल के निर्माण की निर्धारित समयसीमा पर टिकी हैं। दिसंबर तक एक तरफ का काम पूरा होने और फरवरी तक शेष निर्माण समाप्त होने की योजना सफल रहती है तो नए साल में इस क्षेत्र के लोगों को एक्सप्रेसवे का लाभ मिलना शुरू हो सकता है। हालांकि, पूर

दिसंबर से दौड़ेंगे वाहन, एपीएमसी फ्लाईओवर खुलने से 12 लाख लोगों को जाम से मिलेगी राहत

सूरत। शहर के व्यस्त एपीएमसी जंक्शन पर रोजाना लगने वाले लंबे ट्रैफिक जाम से अब जल्द राहत मिलने की उम्मीद है। बीआरटीएस रूट पर निर्माणाधीन फोरलेन फ्लाईओवर का लगभग 95 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है और दिसंबर में इसके उद्घाटन के बाद यातायात के लिए खोलने की तैयारी की जा रही है। इस पुल के शुरू होने से लिंबायत, वराछा, वरेली, कडोदरा सहित आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले करीब 12 लाख लोगों को सीधा लाभ मिलने का अनुमान है। लंबे समय से इस जंक्शन पर लगने वाले जाम के कारण रोजाना परेशान होने वाले वाहन चालकों को अब बिना रुके आवागमन का विकल्प मिल सकेगा। खास बात यह है कि पुल से आम यात्रियों के साथ एंबुलेंस, टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े पार्सल वाहनों और एपीएमसी की मालवाहक गाड़ियों को भी राहत मिलने की संभावना है।

सूरत के एपीएमसी जंक्शन पर यातायात का दबाव लंबे समय से एक बड़ी समस्या बना हुआ है। यह इलाका शहर के कई महत्वपूर्ण मार्गों को जोड़ता है और यहां से रोजाना बड़ी संख्या में दोपहिया, चारपहिया, व्यावसायिक तथा मालवाहक वाहन गुजरते हैं। एपीएमसी मार्केट के दोनों ओर पहले से फ्लाईओवर बने हुए हैं, लेकिन बीच के हिस्से में पुल की सुविधा नहीं होने के कारण वाहनों को नीचे से गुजरना पड़ता था। इस वजह से जंक्शन पर अलग-अलग दिशाओं से आने वाले वाहनों का दबाव एक ही स्थान पर बढ़ जाता था। विशेषकर सुबह और शाम के व्यस्त समय में यहां लंबी कतारें लग जाती थीं और वाहन चालकों को काफी देर तक जाम में फंसे रहना पड़ता था।



ब्रिज विभाग से मिली जानकारी के अनुसार, बीआरटीएस रूट पर बन रहे इस फोरलेन फ्लाईओवर की लंबाई 1025 मीटर और कैरिजवे की चौड़ाई 15 मीटर है। निर्माण कार्य अब अंतिम चरण में पहुंच चुका है। करीब 95 प्रतिशत काम पूरा होने के बाद शेष कार्यों को तेजी से पूरा करने की तैयारी है। विभाग की योजना दिसंबर में पुल का उद्घाटन कर इसे आम यातायात के लिए खोलने की है। हालांकि, वास्तविक शुरुआत निर्धारित निर्माण और उद्घाटन संबंधी तैयारियां पूरी होने के बाद होगी।

अब तक एपीएमसी जंक्शन पर फ्लाईओवर का बीच वाला हिस्सा नहीं होने के कारण ऊपर से गुजरने वाले वाहनों और नीचे सर्विस रोड पर चलने वाले यातायात के बीच दबाव बना रहता था। इसके अलावा एपीएमसी मार्केट के बाहर सब्जी विक्रेताओं की गतिविधियों, माल की आवाजाही और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के कारण भी सड़क पर भीड़ बढ़ जाती थी। बाजार में आने वाले खरीदारों, व्यापारियों और मालवाहक वाहनों की आवाजाही के चलते कई बार स्थिति ऐसी हो जाती थी कि वाहन रेंगते हुए आगे बढ़ते थे। पीक आवर्स में वाहन चालकों को लगभग 45 मिनट तक जाम में फंसे रहना पड़ता था। नए फ्लाईओवर से इस जंक्शन पर यातायात का बंटवारा बेहतर होने और वाहनों की आवाजाही तेज होने की उम्मीद है।

इस परियोजना का एक महत्वपूर्ण पहलू आपातकालीन सेवाओं से जुड़ा है। एपीएमसी जंक्शन के आसपास ट्रैफिक जाम होने से कई बार एंबुलेंस को भी रास्ता मिलने में परेशानी होती थी। गंभीर मरीजों को लेकर अस्पताल जाने वाली एंबुलेंस के लिए हर मिनट महत्वपूर्ण होता है। फ्लाईओवर शुरू होने के बाद स्मीमेर अस्पताल की ओर जाने वाली एंबुलेंस को अधिक सुगम मार्ग उपलब्ध होने की संभावना है। इससे जाम में फंसने की स्थिति कम हो सकती है और गंभीर मरीजों को समय पर अस्पताल पहुंचाने में मदद मिलेगी। चिकित्सा आपातकाल में शुरुआती समय यानी गोल्डन आवर का विशेष महत्व होता है। ऐसे में यातायात की बेहतर व्यवस्था मरीजों के लिए भी लाभकारी साबित हो सकती है।

फ्लाईओवर का लाभ सूरत के औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र को भी मिलने की उम्मीद है। रिंग रोड से आने-जाने वाले टेक्सटाइल कारोबार से जुड़े पार्सल वाहन और एपीएमसी मार्केट की मालवाहक गाड़ियां अक्सर इस जंक्शन से होकर गुजरती हैं। जाम के कारण माल की आवाजाही में देरी होती है, जिससे समय और ईंधन दोनों की खपत बढ़ती है। नया पुल शुरू होने के बाद इन वाहनों को जंक्शन पर लगने वाले जाम से बचकर हाईवे-48 की ओर जाने में सुविधा मिल सकती है। इससे परिवहन की गति बढ़ने के साथ लॉजिस्टिक्स व्यवस्था अधिक प्रभावी होने की संभावना है।

सूरत का टेक्सटाइल कारोबार देश के कई हिस्सों से जुड़ा हुआ है। कपड़ा, तैयार माल और पार्सल की नियमित आवाजाही के लिए तेज और निर्बाध परिवहन व्यवस्था जरूरी है। इसी तरह एपीएमसी से सब्जियों और अन्य कृषि उत्पादों की ढुलाई भी समयबद्ध तरीके से होती है। जंक्शन पर जाम कम होने से व्यापारियों, ट्रांसपोर्टरों और माल की आपूर्ति से जुड़े लोगों को राहत मिल सकती है। वाहनों के रुकने का समय कम होने पर ईंधन की बचत होगी और परिवहन लागत घटाने में भी मदद मिल सकती है। इसका सकारात्मक असर उत्पादन, वितरण और बाजार तक माल पहुंचाने की प्रक्रिया पर पड़ सकता है।

फ्लाईओवर से लिंबायत, वराछा, वरेली और कडोदरा सहित आसपास के क्षेत्रों के करीब 12 लाख लोगों को लाभ मिलने का अनुमान है। इन इलाकों से रोजाना कामकाज, व्यापार, शिक्षा और अन्य जरूरतों के लिए शहर के अलग-अलग हिस्सों में आने-जाने वाले लोगों को इस मार्ग का इस्तेमाल करना पड़ता है। जंक्शन पर लगने वाले जाम के कारण उनकी दिनचर्या प्रभावित होती थी। पुल शुरू होने से यात्रा का समय घटने और आवागमन अधिक सुविधाजनक होने की उम्मीद है।

शहर में उपलब्ध जानकारी के अनुसार, फिलहाल 118 फ्लाईओवर और पुल हैं। ऐसे में एपीएमसी फ्लाईओवर का जुड़ना सूरत की यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम होगा। अब सभी की निगाहें दिसंबर में निर्माण पूरा होने और पुल को आम लोगों के लिए खोलने पर टिकी हैं। यदि तय योजना के अनुसार फ्लाईओवर शुरू हो जाता है तो एपीएमसी जंक्शन पर वर्षों से बनी जाम की समस्या कम करने में मदद मिल सकती है। इससे आम नागरिकों के साथ व्यापारिक गतिविधियों, आपातकालीन सेवाओं और माल परिवहन को भी नई गति मिलने की उम्मीद है।

त्योहारी भीड़ से निपटने के लिए पश्चिम रेलवे चलाएगी दो विशेष ट्रेनें

मुंबई। त्योहारी सीजन में यात्रियों की बढ़ती संख्या और ट्रेनों में अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए पश्चिम रेलवे ने दो वन-वे स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। ये विशेष ट्रेनें 16 नवंबर 2026 को मुंबई सेंट्रल से अयोध्या कैंट और उधना से छपरा के लिए रवाना होंगी। विशेष किराये पर संचालित होने वाली इन ट्रेनों से उत्तर प्रदेश और बिहार जाने वाले यात्रियों को राहत मिलने की उम्मीद है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी विनीत अभिषेक की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, दोनों ट्रेनों का संचालन निर्धारित तिथि पर किया जाएगा।



ट्रेन संख्या 09141 मुंबई सेंट्रल-अयोध्या कैंट वन-वे स्पेशल 16 नवंबर को सुबह 10.30 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन अगले दिन यानी 17 नवंबर को रात 9 बजे अयोध्या कैंट पहुंचेगी। रास्ते में यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन को कई प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। इनमें बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा जंक्शन, रतलाम जंक्शन, नागदा जंक्शन, कोटा जंक्शन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, बयाना जंक्शन, ईदगाह आगरा जंक्शन, टूंडला जंक्शन, कानपुर सेंट्रल, ऐशबाग और बाराबंकी जंक्शन शामिल हैं। इन ठहरावों से महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के यात्रियों को यात्रा की सुविधा मिलेगी।

इसी क्रम में पश्चिम रेलवे ने गुजरात के उधना से बिहार के छपरा के लिए भी विशेष ट्रेन चलाने की व्यवस्था की है। ट्रेन संख्या 09115 उधना-छपरा वन-वे स्पेशल 16 नवंबर को शाम 7.45 बजे उधना से रवाना होगी और तीसरे दिन 18 नवंबर को सुबह 7.30 बजे छपरा पहुंचेगी। इस ट्रेन का मार्ग मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कई प्रमुख शहरों से होकर गुजरेगा, जिससे अलग-अलग क्षेत्रों के यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचने का विकल्प मिलेगा।

उधना-छपरा स्पेशल ट्रेन को व्यारा, नंदुरबार, दोंडाइचा, अमलनेर, धरणगांव, भुसावल जंक्शन, खंडवा जंक्शन, इटारसी जंक्शन, जबलपुर, कटनी जंक्शन, सतना जंक्शन, मानिकपुर जंक्शन, प्रयागराज छिवकी जंक्शन, मिर्जापुर, वाराणसी जंक्शन, जौनपुर जंक्शन, शाहगंज जंक्शन, आजमगढ़, मऊ जंक्शन, रसड़ा और बलिया स्टेशनों पर ठहराव दिया जाएगा। इससे गुजरात और महाराष्ट्र में काम करने वाले उत्तर प्रदेश तथा बिहार के यात्रियों को अपने गृह क्षेत्रों तक पहुंचने में सहूलियत हो सकती है। त्योहारी अवसरों पर बड़ी संख्या में लोग अपने परिवारों के साथ घर लौटते हैं। ऐसे समय में नियमित ट्रेनों में आरक्षण मिलना मुश्किल हो जाता है और कई मार्गों पर यात्रियों का दबाव बढ़ जाता है। पश्चिम रेलवे की ओर से चलाई जा रही ये विशेष ट्रेनें इसी अतिरिक्त यात्री भार को कम करने की पहल हैं। खासकर अयोध्या, पूर्वांचल और बिहार की ओर जाने वाले यात्रियों को इन सेवाओं से अतिरिक्त विकल्प मिलेगा।

रेलवे ने दोनों ट्रेनों को विशेष किराये पर चलाने की जानकारी दी है। यात्रियों को यात्रा से पहले समय-सारणी, ठहराव और आरक्षण से संबंधित विवरण की पुष्टि रेलवे के आधिकारिक माध्यमों से करने की सलाह दी जाती है।

अहमदाबाद-मधुबनी के बीच चलेगी विशेष ट्रेन, बिहार जाने वाले यात्रियों को मिलेगी राहत

अहमदाबाद। शीतकालीन मौसम और त्योहारों के दौरान लंबी दूरी की ट्रेनों में यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए पश्चिम रेलवे ने अहमदाबाद और बिहार के मधुबनी के बीच विशेष ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। विशेष किराये पर संचालित होने वाली इस ट्रेन से गुजरात में रहने वाले बिहार के यात्रियों को अपने गृह राज्य पहुंचने के लिए अतिरिक्त रेल सुविधा मिलेगी। ट्रेन में स्लीपर और सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच लगाए जाएंगे, ताकि अलग-अलग श्रेणियों के यात्री अपनी सुविधा के अनुसार सफर कर सकें। रेलवे ने इस विशेष सेवा के लिए दोनों दिशाओं का समय निर्धारित कर दिया है।



रेलवे की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, ट्रेन संख्या 09433 अहमदाबाद-मधुबनी स्पेशल 17 नवंबर 2026, मंगलवार को अहमदाबाद से सुबह 10.10 बजे रवाना होगी। यह ट्रेन विभिन्न राज्यों और प्रमुख शहरों से होते हुए 19 नवंबर, गुरुवार को रात 1 बजे मधुबनी पहुंचेगी। इस तरह अहमदाबाद से मधुबनी तक की यात्रा में यात्रियों को निर्धारित समय-सारणी के अनुसार करीब 39 घंटे का समय लगेगा।

वापसी यात्रा के लिए ट्रेन संख्या 09434 मधुबनी-अहमदाबाद स्पेशल 19 नवंबर, गुरुवार को शाम 6 बजे मधुबनी से प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन 21 नवंबर, शनिवार को सुबह 7.15 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। वापसी सेवा से बिहार से गुजरात आने वाले यात्रियों को भी अतिरिक्त सुविधा मिलेगी। दोनों दिशाओं में ट्रेन का संचालन विशेष किराये पर किया जाएगा।

इस ट्रेन का मार्ग गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार के कई महत्वपूर्ण शहरों से होकर गुजरेगा। रास्ते में आणंद, छायापुरी, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, उज्जैन, शिहोर, संत हिरदाराम नगर, विदिशा, बीना, दमोह, कटनी मुड़वारा, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा, दानापुर, पटना, बख्तियारपुर, मोकामा, बरौनी, समस्तीपुर, दरभंगा और सकरी स्टेशनों पर ठहराव दिया जाएगा। इन सभी स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में ट्रेन रुकेगी।

रेलवे की इस व्यवस्था से गुजरात के औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में काम करने वाले बिहार के लोगों को विशेष लाभ मिलने की उम्मीद है। अहमदाबाद और आसपास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोग रोजगार, कारोबार और अन्य कार्यों के सिलसिले में रहते हैं। त्योहारों और शीतकालीन अवकाश के दौरान इनमें से कई लोग अपने परिवारों के साथ समय बिताने के लिए बिहार जाते हैं। ऐसे समय में नियमित ट्रेनों में आरक्षण की मांग बढ़ने से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। विशेष ट्रेन के संचालन से उन्हें यात्रा का एक अतिरिक्त विकल्प उपलब्ध होगा।

मधुबनी और दरभंगा के अलावा समस्तीपुर, बरौनी, पटना, आरा, बक्सर तथा पूर्वांचल के रास्ते से जुड़े यात्रियों को भी इस ट्रेन के ठहरावों का लाभ मिल सकेगा। प्रयागराज छिवकी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन जैसे प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव होने से उत्तर प्रदेश के यात्रियों के लिए भी यह सेवा उपयोगी रहेगी। वहीं मध्य प्रदेश के रतलाम, उज्जैन, भोपाल क्षेत्र से जुड़े संत हिरदाराम नगर, विदिशा, बीना और जबलपुर मार्ग के यात्रियों को भी इसका लाभ मिल सकता है।

त्योहारी सीजन में यात्रियों की अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिए रेलवे समय-समय पर विशेष ट्रेनों का संचालन करता है। अहमदाबाद-मधुबनी विशेष ट्रेन भी इसी व्यवस्था के तहत चलाई जा रही है। स्लीपर और सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच होने से विभिन्न वर्गों के यात्रियों को यात्रा का विकल्प मिलेगा। यात्रियों को सफर से पहले आरक्षण, विशेष किराये, कोच संरचना और समय-सारणी की जानकारी रेलवे के आधिकारिक माध्यमों से प्राप्त करने की सलाह दी गई है।

ट्रेन में छूटा 1.20 लाख रुपये से भरा बैग, आरपीएफ ने 79 वर्षीय बुजुर्ग को सुरक्षित लौटाया

भावनगर। ट्रेन में जल्दबाजी के दौरान छूटा 1.20 लाख रुपये नकद से भरा बैग रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से एक बुजुर्ग यात्री को सुरक्षित वापस मिल गया। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में 'ऑपरेशन अमानत' के तहत आरपीएफ जवानों ने ट्रेन संख्या 19120 वेरावल-गांधीनगर में छूटे बैग को बरामद कर उसके मालिक 79 वर्षीय यात्री को सुपुर्द किया। बैग में रखी नकदी के साथ अन्य सामान भी पूरी तरह सुरक्षित मिला। अपना खोया हुआ सामान वापस मिलने पर बुजुर्ग यात्री ने आरपीएफ कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

घटना 15 नवंबर 2026 की है। जानकारी के अनुसार, जूनागढ़ आरपीएफ पोस्ट को ट्रेन के टिकट जांचकर्ता (टीटीई) से सूचना मिली कि ट्रेन संख्या 19120 में एक यात्री का काले रंग का बैग छूट गया है। बैग में करीब 1 लाख 20 हजार रुपये नकद रखे हुए हैं। सूचना की गंभीरता को देखते हुए जूनागढ़ आरपीएफ पोस्ट के सहायक उपनिरीक्षक (एएसआई) जगदीश कुमार ने तत्काल जेतलसर आरपीएफ पोस्ट के एएसआई दीपक मीना को इसकी जानकारी दी। इसके बाद जेतलसर स्टेशन पर ट्रेन के पहुंचने का इंतजार किया गया, ताकि बैग की तलाश कर उसे सुरक्षित कब्जे में लिया जा सके। ट्रेन के जेतलसर स्टेशन पहुंचते ही एएसआई दीपक मीना और कांस्टेबल अल्ताफ कुरेशी ने संबंधित कोचों की जांच शुरू की। तलाशी के दौरान कांस्टेबल



अल्ताफ कुरेशी को एक काले रंग का बैग मिला। बैग मिलने के बाद आरपीएफ ने यात्री से फोन पर संपर्क किया और उन्हें जेतलसर स्थित आरपीएफ कार्यालय पहुंचने के लिए कहा। इस तरह समय रहते बैग को बरामद कर लिया गया और उसे किसी अनधिकृत व्यक्ति के हाथों में जाने से बचाया गया।

बैग के मालिक की पहचान परबतभाई मकवाना के रूप में हुई, जिनकी उम्र 79 वर्ष है। वह गुजरात के जूनागढ़ जिले के मालिया हाटीना क्षेत्र के कुकस्वाड़ा गांव के निवासी हैं। यात्री ने आरपीएफ को बताया कि वह चोरवाड़ स्टेशन से जूनागढ़ जाने के लिए ट्रेन में सवार होने पहुंचे थे। इस दौरान जल्दबाजी में उन्होंने अपना काले रंग का बैग ट्रेन के पीछे वाले सामान्य कोच में रख दिया। इसके बाद टिकट लेने के लिए वह ट्रेन से नीचे उतर गए। इसी बीच ट्रेन स्टेशन से रवाना हो गई और उनका बैग उसी कोच में छूट गया।

यात्री को जब अपने बैग के ट्रेन में छूट जाने का एहसास हुआ, तब तक ट्रेन आगे बढ़ चुकी थी। बैग में 1.20 लाख रुपये नकद के अलावा अन्य जरूरी सामान भी रखा हुआ था। ऐसे में सामान वापस मिलने को लेकर उनकी चिंता बढ़ गई थी। हालांकि, रेलवे कर्मचारियों से मिली सूचना के बाद आरपीएफ ने तत्काल समन्वय स्थापित किया और अगले स्टेशन पर बैग की तलाश कर उसे बरामद कर लिया।

जेतलसर आरपीएफ कार्यालय में यात्री की मौजूदगी में बैग की जांच की गई। जांच के दौरान उसमें रखे पूरे 1 लाख 20 हजार रुपये नकद सुरक्षित मिले। इसके अलावा बैग में मौजूद अन्य सामान भी सही-सलामत पाया गया। आवश्यक पुष्टि के बाद आरपीएफ ने ऑपरेशन अमानत के तहत बैग यात्री को सौंप दिया। नकदी और अपना पूरा सामान वापस पाकर परबतभाई मकवाना ने राहत महसूस की और आरपीएफ जवानों का हृदय से आभार जताया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि आरपीएफ की तत्परता और विभिन्न पोस्ट के बीच बेहतर समन्वय के कारण यात्री का खोया हुआ सामान सुरक्षित वापस मिल सका। उन्होंने कहा कि यात्रियों की सहायता और उनकी संपत्ति की सुरक्षा रेलवे की प्राथमिक जिम्मेदारियों में शामिल है। इस तरह की कार्रवाई रेलवे की सेवा भावना और यात्रियों के प्रति जवाबदेही को दर्शाती है। मंडल रेल प्रबंधक दिनेश वर्मा ने भी इस मानवीय कार्य की प्रशंसा करते हुए आरपीएफ कर्मियों की सतर्कता, संवेदनशीलता और त्वरित कार्रवाई की सराहना की। मंडल सुरक्षा आयुक्त अजय शर्मा के मार्गदर्शन में भावनगर मंडल में यात्रियों की सुरक्षा और सहायता के लिए रेलवे सुरक्षा बल लगातार सक्रिय है। रेलवे का 'ऑपरेशन अमानत' यात्रियों के ट्रेन या रेलवे परिसर में छूटे सामान को तलाशकर उन्हें वापस दिलाने के उद्देश्य से चलाया जाता है। यात्रा के दौरान जल्दबाजी, भीड़ या अनजाने में सामान छूट जाने की घटनाएं सामने आती रहती हैं। ऐसे मामलों में समय पर सूचना और रेलवे कर्मचारियों के बीच बेहतर तालमेल से यात्रियों को बड़ी राहत मिल सकती है। परबतभाई मकवाना को उनका बैग और पूरी नकदी वापस मिलना इसी सतर्कता और समन्वय का उदाहरण है। भावनगर मंडल ने यात्रियों को सुरक्षित एवं सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध कराने के साथ उनके सामान की सुरक्षा और जरूरत के समय हरसंभव सहायता देने की प्रतिबद्धता दोहराई है।

सरखेज के मकान के तहखाने में चल रही थी एमडी ड्रग्स फैक्टरी, एनसीबी ने किया भंडाफोड़

अहमदाबाद। गुजरात में मादक पदार्थों के अवैध कारोबार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने अहमदाबाद के सरखेज इलाके में एमडी ड्रग्स बनाने की कथित अवैध फैक्टरी का भंडाफोड़ किया है। मोहम्मदी पार्क के पास स्थित एक मकान के तहखाने में छिपाकर यह गतिविधि संचालित किए जाने का मामला सामने आया है। एनसीबी की टीम ने छापेमारी के दौरान मौके से ड्रग्स निर्माण में इस्तेमाल होने वाला बड़ी मात्रा में कच्चा माल और मशीनरी बरामद की है, जिसकी कीमत करोड़ों रुपये बताई जा रही है। कार्रवाई के बाद मकान मालिक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। जांच एजेंसी को आशंका है कि मकान के तहखाने का इस्तेमाल लंबे समय से अवैध गतिविधियों को छिपाने के लिए किया जा रहा था। अब यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि यहां मादक पदार्थों का निर्माण किस स्तर पर हो रहा था और तैयार ड्रग्स की आपूर्ति किन लोगों तथा स्थानों तक की जाती थी।



जानकारी के अनुसार, एनसीबी को सरखेज के मोहम्मदी पार्क के आसपास स्थित एक मकान में संदिग्ध गतिविधियां संचालित होने की सूचना मिली थी। सूचना में मादक पदार्थों के निर्माण से जुड़ी गतिविधियों की आशंका जताई गई थी। इसके बाद एजेंसी ने मामले की जानकारी जुटाई और संबंधित मकान पर छापेमारी की। तलाशी के दौरान मकान के तहखाने में ऐसी व्यवस्था मिली, जिसका इस्तेमाल कथित तौर पर मेफेड्रोन यानी एमडी ड्रग्स बनाने के लिए किया जा रहा था। तहखाने में ड्रग्स निर्माण से संबंधित उपकरण और कच्चा माल मिलने के बाद एनसीबी ने पूरे परिसर की बारीकी से जांच शुरू कर दी।

जांच एजेंसी के अनुसार, अवैध गतिविधियों को सामान्य घरेलू या व्यावसायिक गतिविधियों के बीच छिपाने के उद्देश्य से तहखाने का इस्तेमाल किया जा रहा था। इस तरह की व्यवस्था के जरिए बाहरी लोगों की नजर से ड्रग्स निर्माण की गतिविधियों को दूर रखने की कोशिश की गई थी। छापेमारी में बरामद कच्चे माल और मशीनरी को जब्त कर लिया गया है। एजेंसी अब बरामद सामग्री की जांच कर रही है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उससे कितनी मात्रा में मादक पदार्थ तैयार किया जा सकता था और फैक्टरी में उत्पादन की गतिविधियां कब से चल रही थीं।

इस मामले में मकान मालिक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। एनसीबी यह जानने का प्रयास कर रही है कि मकान के तहखाने में चल रही गतिविधियों की जानकारी किस-किस व्यक्ति को थी और इस पूरे काम में अन्य कौन लोग शामिल थे। जांच के दौरान यह आशंका भी सामने आई है कि संबंधित व्यक्ति किसी अन्य व्यवसाय की आड़ में ड्रग्स नेटवर्क से जुड़ी गतिविधियां संचालित कर रहा हो सकता है। इसी कड़ी में एनसीबी की टीम ने उससे संबंधित एक कॉफी शॉप पर भी जांच शुरू की है। एजेंसी यह पता लगाने में जुटी है कि कॉफी शॉप और मकान के तहखाने में मिली कथित अवैध गतिविधियों के बीच कोई संबंध है या नहीं। एनसीबी की जांच का दायरा अब केवल फैक्टरी तक सीमित नहीं है। एजेंसी यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि यहां तैयार होने वाले एमडी ड्रग्स की आपूर्ति किन शहरों और राज्यों में की जाती थी। इसके लिए संदिग्ध संपर्कों, लेन-देन और अन्य संभावित ठिकानों से जुड़ी जानकारियों की पड़ताल की जा रही है। जांचकर्ताओं को यह भी पता लगाना है कि कच्चा माल कहां से लाया जाता था, मशीनरी किसने उपलब्ध कराई और तैयार मादक पदार्थों को बाजार तक पहुंचाने की जिम्मेदारी किसकी थी।

जांच एजेंसी अंतरराज्यीय और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की संभावनाओं को भी ध्यान में रखकर पड़ताल कर रही है। यदि इस फैक्टरी का संबंध किसी बड़े ड्रग्स नेटवर्क से सामने आता है तो मामले में अन्य लोगों और ठिकानों तक कार्रवाई का दायरा बढ़ सकता है। फिलहाल एनसीबी बरामद सामग्री, मकान मालिक से पूछताछ और संबंधित व्यावसायिक प्रतिष्ठान की जांच के आधार पर पूरे मामले की कड़ियां जोड़ने में जुटी है। सरखेज में सामने आई इस कथित ड्रग्स फैक्टरी ने एक बार फिर शहरी इलाकों में छिपाकर संचालित की जाने वाली मादक पदार्थ निर्माण की गतिविधियों को लेकर चिंता बढ़ा दी है। आवासीय मकान के तहखाने में इस तरह की व्यवस्था मिलने से यह सवाल भी उठ रहा है कि अवैध कारोबार चलाने वाले लोग सामान्य इमारतों और व्यावसायिक गतिविधियों की आड़ लेकर किस तरह जांच एजेंसियों की नजर से बचने की कोशिश करते हैं। हालांकि, इस मामले में फैक्टरी के संचालन, उत्पादन और आपूर्ति नेटवर्क से जुड़े सभी पहलुओं की पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी। एनसीबी की कार्रवाई के बाद अब निगाहें इस बात पर हैं कि पूछताछ और आगे की जांच में इस कथित नेटवर्क से जुड़े कितने लोगों की भूमिका सामने आती है।

आदिवासी गौरव के रंग में रंगे उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी, जनजातीय नृत्य में थिरके

वलसाड। भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती पर गुजरात के वलसाड जिले में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस समारोह में आदिवासी संस्कृति और परंपराओं का उत्साहपूर्ण रंग देखने को मिला। समारोह में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने आदिवासी समुदाय के लोगों के साथ पारंपरिक लोक नृत्य में हिस्सा लेकर उनकी खुशियों में सहभागिता की। पारंपरिक वेशभूषा, स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन और लोकगीतों के बीच आयोजित इस कार्यक्रम ने जनजातीय विरासत की जीवंत झलक प्रस्तुत की।



कार्यक्रम की शुरुआत नानापोंधा सर्कल पर भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई। उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके संघर्ष और योगदान को नमन किया। इसके बाद नानापोंधा सर्कल से मुख्य कार्यक्रम स्थल तक रैली निकाली गई। इसमें बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के लोगों ने भाग लिया। रैली के दौरान पारंपरिक लोक नृत्य और स्थानीय वाद्ययंत्रों के साथ संगीत प्रस्तुतियां हुईं। इसी दौरान उपमुख्यमंत्री भी लोगों के बीच पहुंचे और उनके साथ पारंपरिक नृत्य में शामिल होकर उत्सव का हिस्सा बने।

समारोह में स्थानीय निवासियों, आदिवासी समाज के प्रतिनिधियों, समुदाय के नेताओं और विभिन्न पदाधिकारियों ने भाग लिया। आयोजन का उद्देश्य भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष को याद करने के साथ आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और विरासत को सम्मान देना रहा। यह आयोजन गुजरात में 12 से 18 नवंबर तक चलने वाले सप्ताहव्यापी जनजातीय गौरव दिवस समारोह का हिस्सा है। राज्य सरकार की ओर से 14 आदिवासी जिलों, 55 विधानसभा क्षेत्रों, सभी 34 जिलों और 17 नगर निगमों में विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर आदिवासी समाज के विकास और कल्याण से जुड़ी योजनाओं को भी प्रमुखता दी जा रही है। इससे पहले राज्य स्तरीय प्रेस कॉन्फ्रेंस में आदिवासी विकास मंत्री नरेश पटेल ने बताया था कि 15 नवंबर को 2,300 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया जाएगा। इसके साथ ही 18,828 से अधिक आदिवासी लाभार्थियों को जमीन के मालिकाना हक से संबंधित सात-बारा यानी 7/12 दस्तावेज सौंपने की घोषणा की गई है। यह पहल आदिवासी परिवारों को भूमि अधिकारों से जुड़े दस्तावेज उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

स्थानीय आदिवासी खान-पान, पारंपरिक व्यंजनों और उत्पादों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य में 14 'जोहार कैफे' खोलने की भी योजना है। इन कैफे के माध्यम से जनजातीय समुदाय के पारंपरिक स्वाद और स्थानीय उत्पादों को पहचान दिलाने के साथ उनकी आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाएगा।

भगवान बिरसा मुंडा का जीवन आदिवासी स्वाभिमान, अधिकारों और संघर्ष का प्रतीक माना जाता है। 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्होंने जल, जंगल और जमीन पर आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाई और लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनके संघर्ष ने जनजातीय समाज में स्वाभिमान और एकजुटता की भावना को मजबूत किया। इसी ऐतिहासिक योगदान को सम्मान देने के लिए केंद्र सरकार ने वर्ष 2021 से उनकी जयंती 15 नवंबर को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की शुरुआत की।

वलसाड में आयोजित समारोह ने एक बार फिर यह संदेश दिया कि आदिवासी संस्कृति केवल परंपराओं और लोककलाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की पहचान, आत्मसम्मान और ऐतिहासिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है।